संजय की कलम से ..

# शिवरात्रि ही सर्वोत्कृष्ट पर्व है

भारत के लोग शिव को 'मुक्तेश्वर' और 'पापकटेश्वर' मानते हैं। उनकी यह मान्यता है कि शिव 'आशुतोष' हैं अर्थात् जल्दी और सहज ही प्रसन्न हो जाने वाले हैं और अवढरदानी भी हैं अर्थात् सहज ही उच्च वरदान देने वाले हैं। इसी भावना को लेकर वे शिव पर जल चढ़ाते और उनकी पूजा करते हैं। परंतु प्रश्न उठता है कि जीवन-भर रोज़ शिव की पूजा करते रहने पर तथा हर वर्ष श्रद्धापूर्वक शिवरात्रि पर जागरण, व्रत इत्यादि करने पर भी मनुष्य के पाप और संताप क्यों नहीं मिटते, उसे मुक्ति और शक्ति क्यों नहीं प्राप्त होती और उसे राज्य-भाग्य का अमर वरदान क्यों नहीं मिलता? आखिर शिव को प्रसन्न करने की सहज विधि क्या है, शिवरात्रि का वास्तविक स्वरूप क्या है और हम शिवरात्रि कैसे मनायें और 'शिव' का 'रात्रि' के साथ क्या संबंध है? जबकि अन्य देवताओं का पूजन-यजन दिन को होता है, शिव का रात्रि में क्यों होता है और शिवरात्रि फाल्गुन मास की चौदहवीं अंधेरी रात में, अमावस्या के एक दिन पहले क्यों मनाई जाती है?

### 'महारात्रि' है सूचक अज्ञानता की

सभी जानते हैं कि रात्रि के अंधकार में मनुष्य को चीज़ों का ठीक-ठीक पता नहीं चलता और रात्रि को सामाजिक तथा नैतिक अपराध भी बहुत होते हैं। अत: साधारण तौर पर 'रात्रि' अज्ञानांधकार, पाप और तमोगुण की निशानी है। कृष्ण पक्ष की रात्रि में तो और भी अधिक अंधकार होता है। फिर चौदहवीं रात को तो घोर अंधकार होता है। अत: कृष्ण पक्ष की चौदहवीं रात अज्ञानता, पापाचार और दुराचार की प्रतिनिधि है।

फाल्गुन मास वर्ष का 12वां अर्थात् अंतिम मास है। अत: फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चौदहवीं रात्रि तो 'महारात्रि' है। वह कल्प के अंत में होने वाली घोर अज्ञानता और अपवित्रता की द्योतक है। आध्यात्मिक दृष्टिकोण से द्वापर युग और कलियुग को 'रात्रि' अथवा 'कृष्ण पक्ष' तो कहा ही गया है, इसमें कलियुग का पूर्णान्त होने से कुछ वर्ष पहले का जो समय है वह उपान्त कृष्ण पक्ष की चौदहवीं रात्रि के समान है।

अत: 'शिवरात्रि' फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की अंतिम रात्रि (अमावस्या) से एक दिन पहले मनाई जाती है क्योंकि परमपिता परमात्मा शिव का अवतरण इस लोक में

(शेष..पृष्ठ 32 पर)

## अमृत-सूची


- सद्गुण देते संतोष *(सम्पादकीय)* ..... 4
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के..7
- पुरुषोत्तम संगमयुग एवं .....9
- 'पत्र' संपादक के नाम .....12
- जब प्रभु ने मुझसे ब्याह .....13
- समायोजन की शक्ति.....16
- जीवन का स्वर्ण काल .....19
- मैली चादर ओढके कैसे..... 21
- सकारात्मक सोच एवं..... 22
- गॉड ने दिलवाया गोल्ड..... 23
- मजबूत संगठन..... 24
- बाबा रखते ध्यान हैं *(कविता)* 25
- कैदी है तन, आजाद है मन... 26
- दिव्य गुणों का अवतार.....28
- जीवन जीएं ऐसे *(कविता)* .... 29
- सचित्र सेवा समाचार..... 30



### सदस्यता शुल्क

| भारत | वार्षिक | आजीवन |
|---|---|---|
| ज्ञानामृत | 80 /- | 2,000/- |
| वर्ल्ड रिन्युअल | 80/- | 2,000/- |
| **विदेश** | | |
| ज्ञानामृत | 750 /- | 8,000/- |
| वर्ल्ड रिन्युअल | 750/- | 8,000/- |

शुल्क केवल '**ज्ञानामृत**' अथवा '**द वर्ल्ड रिन्युअल**' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

**- शुल्क के लिए सम्पर्क करें - 09414006904, 09414154383**

सम्पादकीय ..✍

# सद्गुण देते संतोष

संतोष को बहुत बड़ा गुण माना गया है। कहा गया है, संतोषी सदा सुखी। यह भी कहा गया है कि सब प्रकार के धन आ जाने पर भी यदि संतोष रूपी धन नहीं आया तो समझिए कुछ भी नहीं आया। इस अर्थ में हम कह सकते हैं असंतोषी ही सबसे बड़ा अभावग्रस्त है।

### क्या असंतोष भी अनिवार्य है?

परंतु आधुनिक काल में सभी परिभाषायें उलट गई हैं। आजकल यह प्रश्न उठाया जाता है कि यदि आप संतुष्ट हो गये तो आगे कैसे बढ़ेंगे, आपकी उन्नति पर रोक लग जायेगी, आप जहाँ के तहाँ खड़े रहेंगे। यह भीतरी असंतोष ही तो है जो आपको कुछ कर गुज़रने के लिए उत्साहित करता है। दूसरा प्रश्न यह भी है कि कई बार यह असंतोष कुछ कर गुज़रने की ओर नहीं बल्कि डिप्रेशन की ओर भी ले जाता है। मन की मुराद नहीं मिली, महत्त्वाकांक्षा पूरी नहीं हुई तो जीने की इच्छा भी पूरी हो गई। लगता है किसी को मुँह दिखाने लायक नहीं रहे। तीसरा प्रश्न यह भी है कि असन्तोष कई बार अपराध की ओर भी मोड़ता है। हिंसा, तोड़-फोड़ आदि के द्वारा व्यक्ति अपने असंतोष को ही तो प्रकट करता है।

आइये विचार करें, संतुष्ट रहने के क्या मायने हैं, असंतोष लाभकारी है या नुकसानकारी? हमारा असंतोष हमें अवसादग्रस्त और अपराधी न बनाए, उसके लिए क्या करें?

### संतुष्टता के साथ उठाएँ पहला कदम

मनुष्य कितना भी ऊँचा लक्ष्य रखे, भले ही अपने सामर्थ्य से ऊंचा भी रख ले पर प्रथम अनिवार्य बात यह है कि वह संतोष के साथ पहला कदम उठाए और संतुष्ट मनःस्थिति के साथ लक्ष्य की ओर चलता जाए। जो है ही असंतुष्ट, उसके कदम ना तो ठीक से उठते हैं, ना ठीक से मंज़िल तक पहुँच पाते हैं। जिसका विश्वास टूट गया, वह एक कदम आगे बढ़ाकर, दूसरा फिर पीछे खींच लेगा, यह सोचकर कि पता नहीं सफलता होगी कि नहीं होगी।

### सोचें कम, करें ज्यादा

मान लीजिए, हमें सौ किताबें पढ़नी हैं, अगर हम सोचते ही रहें, तो आज तो दस पन्ने भी नहीं पढ़े जायेंगे। अगर हम हैं ही असंतुष्ट तो कार्य में मन लगेगा कैसे? असंतुष्ट व्यक्ति केवल सोचता है, काम नहीं करता। जब करेंगे ही नहीं तो संतुष्टता और सफलता आयेगी कहाँ से? अतः असंतोष को छोड़कर आप कार्य में लगिए। आपने 15 दिन में 5 पुस्तकें पढ़ डाली। यह आपकी उपलब्धि है। इस उपलब्धि को देख उत्साहित रहिए। आपको अभी और मेहनत करनी है। लक्ष्य अभी भी आपके सामने है। यदि आप संतुष्ट हैं तो 18 घंटे भी पढ़ाई कर सकते हैं। ऐसा करते-करते आप 80 पुस्तकों तक पहुँच गए, यह सफलता संतोष के साथ कार्य पूर्ण करवा देगी।

किसी ने ठीक ही कहा है, हज़ारों मील का रास्ता भी एक-एक कदम उठाकर ही तो तय किया जाता है। **असंतुष्ट होकर हम कार्यक्षमता को क्षीण कर लेते हैं। अतः आज तक जो और जितना प्राप्त हुआ, उसके प्रति आस्थावान रहकर, उसका सम्मान करते हुए ही हम आगे जा सकते हैं। पीछे मुड़कर देखें तो भी संतोष, अब की यात्रा भी संतोष के साथ जारी है और लक्ष्य पर भी संतोषपूर्वक पहुँचेंगे। यदि पिछली प्राप्ति को असंतोष की नज़र से देखते रहेंगे तो आगे की ओर बढ़ाने वाली नज़र कहाँ से लायेंगे?**

### कर्मठ बनाता है संतोष

संतोष का यह अर्थ भी नहीं है कि रजाई तानकर सोते रहा जाये। इसका नाम तो आलस्य है, प्रमाद है। संतोष हमें निठल्ला नहीं बनाता वरन् सकारात्मक मनःस्थिति के साथ कर्मठ बनाता है। मेहनत, सच्चाई, ईमानदारी को साथ लेकर कर्म अवश्य करना है। फिर इन बीजों से जो फल मिला, उसमें संतुष्ट रहना है। **यदि मन में यह विचार आता है कि मेहनत वाला बीज कम फल देता है, सच्चाई, ईमानदारी वाले बीज भी कम फल देते हैं। इससे अच्छा तो यह है कि झूठ-बेईमानी के बीज बोकर ज्यादा कमाऊँ। कमा तो लेंगे पर संतुष्टता को खो देंगे। पहले धन-साधन कम थे पर संतोष था। अब धन-साधन बढ़ गये पर असंतोष है। पहले केवल अपने को देखते थे, अब दूसरों को देखने लगे, उनसे तुलना करने लगे। तुलना ही तो तनाव पैदा करती है। पहले सब सच्चे नज़र आते थे, अब सच का दामन स्वयं ने छोड़ा तो औरों की सच्चाई पर भी शक करने लगे। इस प्रकार अवगुणों का ज़खीरा बढ़ता गया।**

हमारे दुर्गुण हमें असंतुष्ट करते हैं। दुर्गुणों के आधार पर कोई उपलब्धि हो नहीं सकती। यदि अल्पकाल के लिए हो भी जाती है तो आत्मा को सच्चा सुख, सच्ची शान्ति नहीं मिलती, अंदर असंतोष व्याप्त ही रहता है। यह असंतोष हमें कुछ करने को भले ही उकसाता है परन्तु प्राप्ति अल्पकाल की ही होती है जिससे पुनः असंतोष व्याप्त हो जाता है, इस प्रकार यह कुचक्र चलता रहता है।

### क्या कहती है बोध-कथा

एक बार किसी मंदिर में कार्यक्रम चल रहा था। पीतल और तांबे के लोटे, एक कोने में सहेज कर रख दिए गए थे। मांगलिक क्रिया-कलापों में कब हमारी आवश्यकता आए और हम भी किसी के कोमल हाथों का स्पर्श प्राप्त करें, लोटे इस इंतजार में थे। तभी एक पंडित जी आए और एक तांबे के लोटे को उठा ले गए। यह देख पीतल के लोटे की असंतुष्टता बढ़ गई कि हर जगह इन्हें ही प्रथम स्थान दिया जाता है, हमारी इंतजार की घड़ियाँ भी तो पूरी होनी चाहिएँ ना! असंतुष्टता बहुत बढ़ी तो वह स्वयं अपने स्थान से लुढ़कने लगा और लुढ़कते-लुढ़कते बीच रास्ते में आ गया। अब क्या था, हर आने-जाने वाले की तीखी ठोकरें कभी पेट पर, कभी गले पर पड़ने लगीं जिससे वह इतना अस्थिर और अपमानित हो गया कि अब पूजा के लायक भी नहीं रहा। इसी बीच अन्य लोटे उठा लिए गए थे और वे पूजा-कार्य की शोभा बढ़ा रहे थे।

### अवगुण किसी के मित्र नहीं

उपरोक्त कथा बोध-कथा है। इसमें जड़ लोटों की उपमा देकर चेतन प्राणी की असंतुष्टता की स्थिति और परिणाम दिखाया गया है। कथा में असंतुष्ट लोटे में ईर्ष्या है। इसलिए दूसरे की बारी आने पर उससे सहन नहीं हो रहा। उसमें धैर्य की भी कमी है जिस कारण वह इंतज़ार नहीं कर पा रहा जबकि हर सुअवसर के लिए प्रतीक्षा करनी पड़ती है। अधैर्य की स्थिति में हम जो निर्णय लेते हैं वे पहले से भी बुरी स्थिति में ला देते हैं, इसी कारण बेचारा लोटा पहले एक कोने में था पर अब तो ठोकरों में आ गया। जब वह रास्ते में लुढ़का और ठोकर खाने के निमित्त बना तो अवश्य ही वह दुआ के स्थान पर बद्दुआ का पात्र भी बना। मज़े की बात यह भी है कि असंतुष्ट होकर वह जितना आगे होने की कोशिश करता है उतना ही उसे इच्छा के विपरीत व्यवहार झेलना पड़ता है।

### सहारा लें गुणों का

तो प्रश्न यह है कि यदि हम असंतुष्ट हैं तो क्या उसके निवारण का कोई उपाय ना करें? करें, अवश्य करें पर ऊपर जिन अवगुणों का वर्णन किया गया है, उनका आधार या आसरा लेकर ना करें। **ये**

**अवगुण तो ज़हर हैं, बिगड़ी बनाने वाले नहीं, बिगाड़ने वाले हैं, किसी के भी मित्र नहीं हैं। जैसे ज़हरीले जीवाणु किसी के मित्र नहीं होते, जिस भी शरीर में प्रवेश करेंगे, उसे बीमार ही करेंगे। ऐसे ही ये विकार भी किसी के मित्र नहीं होते। यदि हमें असंतुष्टता को जीतना है तो गुणों का सहारा लेकर जीतें, नहीं तो असंतुष्ट तो हम पहले से ही थे, अब ईर्ष्या, अधैर्य, असहनशीलता से और भर गए तो हमारी क्या गति होगी?**

### खोखला कर देती है ग़लत सोच

असंतुष्टता व्यक्ति को वैसे ही खोखला कर देती है जैसे दीमक लकड़ी को। वह बाहर से अच्छा दिखाई देगा पर अन्दर से उसमें आत्मिक बल नहीं होता। जैसे पानी के बहाव के रास्ते में पड़ा मिट्टी का ढेला, बहाव की थपेड़ लगते ही बह जाता है और चट्टान का टुकड़ा अडिग रहता है। क्यों? क्योंकि चट्टान मज़बूत है और मिट्टी का ढेला खोखला। तो जो व्यक्ति गलत सोच-सोच कर आत्मबल को क्षीण कर लेता है वह परिस्थिति के एक ही वार में टूट जाता है और जो थपेड़े सहन करके भी अडिग रहता है वह सबकी वाहवाही का पात्र बनता है।

### व्यर्थ बातें बनाती हैं विकारी

असंतुष्टता से बचाव के लिए ध्यान रहे कि जो व्यर्थ बातें मन में चलती हैं, वे धीरे-धीरे व्यर्थ से विकारी बन जाती हैं। जैसे आलू के छिलके व्यर्थ होते हैं पर यदि दो दिन पड़े रहें तो बदबूदार भी हो जाते हैं अत: व्यर्थ बात दो घड़ी भी मन में पड़ी रहेगी तो विकार उत्पन्न करेगी। अत: जितना जल्दी हो सके इन्हें निकाल दीजिए।

### सुधारना है अपने को

स्वीकार कीजिए कि मेरे जीवन में जो कठिनाई या भाव-स्वभाव की टक्कर है उसका कारण मेरा बोया हुआ बीज है। उसे अंकुरित होने, बड़ा होने और फलने-फूलने में इतना समय लग गया पर अब मुझे अपने बोए बीज का फल स्वीकार करना ही पड़ेगा। दूसरों की तरफ उंगली बिल्कुल नहीं करनी, अपने को ही पल-पल सुधारना है।

### असंतुष्टता ग्रहचारी है

असंतुष्टता भी एक ग्रहचारी है। राहू की दशा है। दशा उतारने के लिए दान-पुण्य किया जाता है। हमें भी देहभान का दान, स्थूल प्राप्तियों का दान या त्याग करके इसे उतारना है। अधिक योगाभ्यास, गुणों और शक्तियों की अधिक धारणा करके, अधिक सेवा करके इस ग्रहचारी को उतारना है।

### संतुष्ट को मिलता है अतीन्द्रिय सुख

भगवान शिव कहते हैं कि संतुष्टता की निशानी है प्रसन्नता। कोई भी परिस्थिति संतुष्ट आत्मा की स्वस्थिति को हिला नहीं सकती। उसे हर परिस्थिति कार्टून शो की तरह मनोरंजक लगती है। परिस्थिति वार करने के बजाय हार जाती है। संतुष्ट आत्मा को मेहनत नहीं करनी पड़ती बल्कि जीवन अतीन्द्रिय सुख से भरपूर और मनोरंजक लगता है।

### सद्गुण स्थिरता प्रदान करते हैं

पेड़ का आधार धरती है, वह उस पर टिका है। यदि वह उससे अलग होने की सोचे तो क्या उसे कहीं ठिकाना मिलेगा? इसी प्रकार मानवात्मा की स्थिरता और संतुष्टता का आधार उसके सद्गुण हैं जैसे कि त्याग, दया, परोपकार, पवित्रता, क्षमा आदि। इन गुणों की जितनी वृद्धि होगी उतने हम अन्दर से स्थिर, संतुष्ट और एकाग्र रहेंगे। एकान्त में बैठकर इन गुणों का मनन-चिन्तन करने से ये वृद्धि को प्राप्त करते हैं। दूसरों के प्रति इनका दान करें तो भी ये बढ़ जाते हैं और परमात्मा, जो कि इन गुणों के सागर हैं, उनकी स्मृति में रहने से भी ये गुण बढ़ जाते हैं।

**– ब्र.कु. आत्म प्रकाश**

# प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

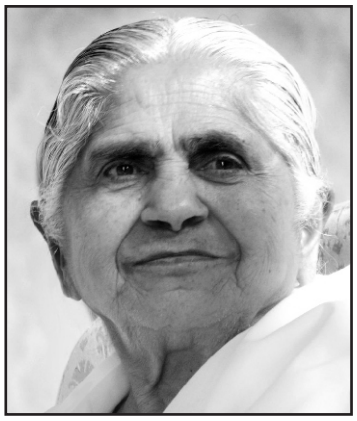

दिव्यबुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर ... – सम्पादक

**प्रश्नः- भगवान कहते हैं, ब्राह्मणों में भी अर्थात् जिनको भगवान का ज्ञान है, उनमें भी विरले ही भगवान को जो है, जैसा है, वैसा जानते हैं, इसका भावार्थ क्या है?**

**उत्तरः-** पहले बुद्धि से जानना, फिर दिल से उसको मानना, फिर जितना पहचानना उतनी प्राप्ति। कइयों ने जाना है, भगवान एक है, भटकन छूटी है, इसलिए मुरली से प्यार है, ज्ञान अच्छा लगता है, जीवन में पवित्रता है, मन को शान्ति आई है परंतु जो बाबा कहता है, मैं जो हूँ, जैसा हूँ, वैसा पहचान, इसमें तीनों बाप को पहचानना होगा। हम कहते हैं, लौकिक पूरा हो गया, अब साकार, अव्यक्त, निराकार तीनों की पहचान चाहिए। ब्रह्मा बाबा को न सिर्फ दिल मानता है कि मेरा बाबा है बल्कि कर्म में भी कहती हूँ, जो मेरा बाबा करता है, वो मुझे करना है। कोई प्राइम मिनिस्टर का सेक्रेटरी है, उसे नशा रहता है। यूँ तो सिक्योरिटी गार्ड भी होते हैं परंतु यह खास है। कम से कम ऐसे-वैसे को तो नहीं रखा होगा ना। भगवान को भी लगे कि यह मेरा पर्सनल बच्चा है। बाबा कहते, सूक्ष्मवतन तुम्हारे लिए है। तो फीलिंग आए सूक्ष्मवतन में मेरा बाबा है। वहाँ से स्नेह की शक्ति लेना, सूक्ष्म इशारों को समझना – पहचान वाला ही इशारे को समझता है।

**प्रश्नः- आजकल जो सेवा होती है, उसमें ब्राह्मण तो थोड़े ही निकलते हैं पर समय और धन तो बहुत लगता है, इसके पीछे क्या राज़ है?**

**उत्तरः-** लंदन में पहले-पहले ओलंपिया में प्रदर्शनी की थी। भारत से दस गुणा ज्यादा खर्चा वहाँ हुआ। पर हमारा फर्ज है सबको संदेश देना। सेवा भी हमारे विद्यालय की शान है। लोग कहते हैं, ब्रह्माकुमारियाँ जो सेवा उठाती हैं, दिल से करती हैं। हरेक संस्था को सेक्रेटरी रखना पड़ता है, पैसे देने पड़ते हैं। ब्रह्माकुमारीज़ का पता नहीं, यहाँ पैसा कहाँ से आता है, मैन पावर कहाँ से आती है, चकित हो जाते हैं। यहाँ सेवाभाव है, अंदर है कि मैसेज सबको मिले। बाबा ने इशारा दिया था, वारिस और माइक निकालो। हजारों, लाखों ब्राह्मण बनाना बड़ी बात नहीं है। पहले ब्राह्मण बनाना मेहनत थी, आजकल एक-दो को देखकर कलम लग जाता है। कोई वारिस और माइक निकले, उसके लिए बड़े-बड़े कार्यक्रम या वर्गीकरण की सेवा है। आई.पी., वी.आई.पी. कहते, कार्य बहुत अच्छा है पर 'बाबा आप ही सब कुछ हो, आपका ज्ञान ही सच्चा है' ऐसा आवाज उनके अंदर से निकले, इसमें अभी समय है। जो सेवायें हुई हैं, उनके पीछे बाबा का राज़ यही है। समय भागता जा रहा है, विनाशकाल के पहले ही सबको संदेश मिलना है ज़रूर।

**प्रश्नः- संपन्न और संपूर्ण बनने का क्या पुरुषार्थ करें?**

**उत्तरः-** सेकंड में फुलस्टाप, सेकंड में मुक्ति, फिर जीवनमुक्ति, मन शान्त, कर्मेन्द्रियाँ शीतल, दिल से

देखो, बाबा सामने है, ऐसा रिहर्सल करते रहें। **जिस संकल्प की जरूरत नहीं, उसकी उत्पत्ति ना हो, आया तो भी सेकंड में शांत हो जाए। बिचारा न बनें, विचारवान बन सेकंड में अपने को फ्री कर दें।** देखो, फ्री है आत्मा, ना बीती बात, ना आने वाली बात, वर्तमान शांत है, दिल में प्रसन्नता है, सर्वशक्तियाँ अच्छी तरह साथ दे रही हैं। समय पर जिस शक्ति की आवश्यकता है, वह काम कर रही है। यह भी शिकायत ना हो कि यह शक्ति काम नहीं कर रही है। यह भी शान नहीं है। शान यह है कि निशान सामने हो, पहुँचना है। बाबा कहता, हाथ लगाकर फिर आओ, ऐसा मेरा अटेन्शन निशान तक हो, यह मेरा शान है। **जिगर से, प्यार से, अपने से राज़ी, सबसे राज़ी, तो सच्चे दिल पर साहेब भी है राज़ी। एक मिनट की है बाज़ी। खुद से काम चलाऊ राज़ी नहीं। अंदर से पूछो, किसी से नाराज़ तो नहीं हूँ।** ऐसी स्वमान की स्थिति से सबको सम्मान दूँ। बाबा ने इतना जो समझाया है, उस अनुसार चलने को बाबा कहता है। जब दुनिया के आधारमूर्त हैं तो हमको कोई आधार नहीं चाहिए। बोल और स्थिति की समानता हो।

**प्रश्नः- राइट हैण्ड, लैफ्ट हैण्ड बच्चे किन्हें कहेंगे?**

**उत्तरः-** कभी थोड़ा सोचने की स्थिति में हुआ मानो लेफ्ट हैण्ड में चला गया। काम में भारी हुआ, लेफ्ट हैण्ड में चला गया। एक काम, दूसरा, तीसरा, चौथा भी मेरे पर – ऐसा सोचा, लेफ्ट हैण्ड में चला गया। संकल्प में थोड़ी-भी स्वच्छता की कमी हुई, लेफ्ट हैण्ड में चला गया। एक बार बाबा बैठा था, कहा, मेरा कोई राइट हैण्ड नहीं है अभी, बच्ची। मुझे उस समय लग गया कि भगवान को क्या चाहिए। बाबा ने प्रेरणाएँ दी हैं सेवा के लिए, शिक्षायें दी हैं हमारे लिए। राइट हैण्ड वही होगा जो शिक्षाओं को धारण करेगा, उससे स्वतः शिक्षायें काम करायेंगी। शिक्षक बनकर काम नहीं कर सकते हैं, शिक्षायें काम कराती हैं। राइट हैण्ड के संकल्प में सफाई होती है जैसे जादूगर के भी हाथ में सफाई होती है। दानी कोई सोचता नहीं है कि मुझे दान करना है, अपने आप उसका जी चाहता है कि जो मुझे मिला है, वह औरों को मिले। रात को एक भाई ने कहा, **दुनिया में लोग कहते हैं, जो इनके पास है वो मेरे पास आए। भगवान का बच्चा सोचेगा, जो मेरे पास है, वो सबके पास जाए।** कितना अंतर हो गया। कराने वाला करा रहा है, जी चाहता है, सब ऐसी स्मृति में रहें। उमंग-उत्साह सदा है, मैं नहीं करूँगा, तो कौन करेगा। 'हाँ जी' कहने वाले के सामने हज़ूर भी हाज़िर हो जाता है।

**प्रश्नः- सेवा के प्रति बहुत प्यार किसका होता है?**

**उत्तरः-** जो अंदर से स्थिति पर ध्यान देता है, उसका सेवा से बहुत प्यार रहता है क्योंकि सेवा बहुत प्रकार की है और सबसे श्रेष्ठ सेवा मनसा सेवा है। मनसा सेवा कर्मसंबंध में दिखाई पड़ती है, छिपती नहीं है। कोई कोने में बैठ करके हम बाबा को याद नहीं कर सकते हैं परंतु याद में रहते जहाँ भी बैठें, उसमें सेवा समाई हुई है। दिन-प्रतिदिन चलन और चेहरे से सेवा सहज और स्वतः दिखाई देती है। अंदर की धारणा का आइना साफ है तो बुद्धि कहीं फालतू बातों में नहीं जाती है। यह भी नहीं कहते कि मेरा विचार तो ऐसे ही था, अभी जो हुआ सो अच्छा। सूक्ष्म में कोई भी प्रकार के संकल्प, जिनकी ज़रूरत नहीं है, उन्हें एलाऊ नहीं कर सकते। जो हो रहा है, उस पर ध्यान दें। जो हो गया है, उसको मन में रिपीट करने की ज़रूरत नहीं है, मन में सोचना ही नहीं है। कोई क्या करता है, वो हमको नहीं देखना है। कोई काम करता है और आप उसको बोलते रहो तो वो मूँझेगा। उसको छोड़ दो, वो अच्छा ही करेगा। किसी ने गलत काम किया तो दस को सुनायेंगे लेकिन इन बातों में खबरदार रहना है। अपने संकल्पों को स्वच्छ बनाने की बहुत सूक्ष्म चेकिंग है जिससे ही न्यारे बनते हैं। ❖

# पुरुषोत्तम संगमयुग एवं ईश्वरीय कारोबार

• ब्रह्माकुमार रमेश शाह, गामदेवी (मुंबई)

दुनिया में अनेक प्रकार के कारोबार के लिए अनेक प्रकार के पाठ्यक्रम (Courses) बने होते हैं। इन पाठ्यक्रमों के द्वारा परीक्षाओं में उत्तीर्ण होने वालों को उपाधि (Degree) मिलती है। हर प्रकार के कारोबार को करने की कुछ विशेषतायें होती हैं जिन्हें अपनाना बहुत ज़रूरी होता है। इसी प्रकार से, ईश्वरीय परिवार के बीच ईश्वरीय कारोबार करने में अनेक बातों का ध्यान रखना पड़ता है। इस कारोबार के अगर हम पूर्ण रूप से अभ्यस्त और फिर सफल हो जायेंगे तो यही संस्कार लेकर सतयुग में जायेंगे और इन्ही के आधार पर सतयुगी और त्रेतायुगी राज्य कारोबार करने में हमें सफलता प्राप्त होगी।

मिसाल के तौर पर, एक बार जब मैं मधुबन में था तो रात्रि क्लास के बाद प्यारे ब्रह्मा बाबा ने मुझे भ्राता जगदीश जी से आई हुई कुछ लिखत पढ़ने को दी और कहा कि पढ़ने के बाद मुझसे राय करना। दूसरे दिन सुबह मुरली के तुरंत बाद ही ब्रह्मा बाबा ने मुझसे पूछा, बच्चे, उस लिखत को पढ़ा? आप सब जानते हैं कि हम सब बच्चे बहानेबाजी में होशियार हैं तो बहानेबाजी के इसी संस्कार के आधार पर मैंने बाबा को कहा, बाबा, आपने रात को दिया था, फिर हम सो गये। सुबह योग के बाद फ्रेश होकर मुरली क्लास में आ गये, पढ़ने का समय ही कहाँ मिला। ब्रह्मा बाबा ने मुझे कहा, बच्चे, सारी रात तो आपके पास थी, रात को जागकर भी कार्य कर सकते थे। बाबा जो कार्य देता है, उसे जान की बाजी लगाकर करना चाहिए, उसमें देरी नहीं करनी चाहिए, बाबा को देरी से किया हुआ काम पसंद नहीं आता। फिर बाबा ने कहा, बच्चे, लिखत मुझे दे दो, मैं जगदीश बच्चे को जवाब दूँगा। मैंने कहा, बाबा, आप आधा घंटा दो तो मैं पढ़कर बताता हूँ। बाबा ने कहा, नहीं बच्चे, आपको कार्य करने का चांस बाबा ने दिया, आपने समय पर नहीं किया, बाबा आपको ज्यादा समय नहीं दे सकता, आज 10 बजे की पोस्ट में उसे भेजना है, बाबा यह कारोबार कर लेगा। तब से मैंने अपने जीवन में यह संस्कार बना लिया कि बाबा का कार्य, ईश्वरीय सेवा का कारोबार तुरंत ही होना चाहिए इसलिए मेरे पास जो भी ईश्वरीय कारोबार अर्थ पत्र या ई-मेल आदि आते हैं, उनका जवाब 24 घंटे में देने का लक्ष्य रखता हूँ।

बाबा के कई बच्चे कारोबार करने में समय लगा देते हैं, परिणामरूप आगे का कारोबार रुक जाता है इसलिए जो भी जिम्मेवार हैं, उनका फर्ज है कि अपने कारोबार को समय पर या समय से पहले ही पूरा करें। मातेश्वरी जी हमेशा यही कहती थी कि बाबा का कोई भी कार्य समय पर ही करना चाहिए। जैसे ट्रेन में सफर करना होता है तो समय पर पहुँचना होता है, नहीं तो गाड़ी चली जाती है, उसी प्रकार बाबा सबको आगे बढ़ने का अवसर देते हैं। अगर हमने समय पर कार्य नहीं किया तो बाबा अपना कार्य किसी और से करा सकता है।

इसी तरह से ईश्वरीय कारोबार में सिर्फ भावनाओं के आधार पर खर्च नहीं करना चाहिए। ब्रह्मा बाबा ने इस संबंध में एक बार बच्चों की परीक्षा ली। बाबा मुंबई में बीकन्स में ठहरे हुए थे। मुरली के बीच में बाबा ने बच्चों से कहा, बाबा आज सब बच्चों की परीक्षा लेता है। मधुबन से पत्र आया है कि मजदूरों के लिए छाता चाहिए। तो बाबा सभी बच्चों को कहता है कि सब एक-एक छाता

खरीद कर लाएँ, बाबा देखना चाहता है कि बच्चों में खरीद करने की कितनी क्षमता है। मुरली के बाद जब मैं ब्रह्मा बाबा से मिला तो मैंने कहा, बाबा, कल तो आपको कम से कम 200 छाते मिल जायेंगे और आपको आबू में ट्रक से भेजने पड़ेंगे। ब्रह्मा बाबा ने हँसते-हँसते कहा कि बाबा जो कहे, बच्चे अगर तुरंत करें तो स्वर्ग अभी आ जायेगा। देखना कल क्लास में 8-10 भी ऐसे महावीर भाई-बहनें नहीं होंगे जो छाता लाये होंगे। सचमुच ऐसा ही हुआ।

दूसरे दिन जब मुरली क्लास में बाबा ने पूछा तो करीब 7 भाई-बहनें उठे और उन्होंने अपने द्वारा खरीदा छाता बाबा को दिखाया। एक भाई बहुत महंगा छाता लाया था तो बाबा ने उससे पूछा, इतना महंगा छाता क्यों खरीदा? तब उस भाई ने कहा कि बाबा, आपने कहा है इसलिए अच्छे से अच्छा और महंगे से महंगा छाता खरीदा है। ऐसे किसी ने फोल्डिंग छाता तो किसी ने फैन्सी छाता खरीदा हुआ था। हमारे मधु भाई ने एक छाता बाबा को दिखाया तो बाबा ने पूछा, कितने का लिया? मधु भाई ने कहा, बाबा, आठ रुपये का, इसका लकड़े का हैण्डिल है और बड़ा साइज है। बाबा ने उसकी परीक्षा लेते हुए पूछा कि जब बाबा ने कहा है तो इतना सस्ता क्यों खरीदा? उस भाई ने कहा कि बाबा, छाता आपके लिए खरीदना होता तो अच्छे से अच्छा खरीदते पर यह तो मजदूरों को देना है। अगर प्लास्टिक के हैण्डिल का फैन्सी छाता होगा तो मजदूरों के हाथ से टूट जायेगा। मजदूर के सिर पर तो बोझा होता है और उसे लिए हुए ही उसे आगे बढ़ना होता है इसलिए छाता बड़ा और मजबूत होना जरूरी है। इस पर बाबा ने उस भाई के लिए कहा कि इस भाई को खरीदारी का पूरा ही अक्ल है। तब से ब्रह्मा बाबा ने उस भाई द्वारा ही यज्ञ की लाखों रुपये की खरीदारी करवाई। यज्ञ के लिए आवश्यक खरीदारी की चिट्ठी प्रतिदिन उनके पास आती थी। इस प्रकार से खर्च के संबंध में बाबा के इस मंत्र 'कम खर्च बालानशीन' को ध्यान में रखना चाहिए।

परंतु, इसका अर्थ यह भी नहीं कि आवश्यक बातों पर खर्च न करें। मिसाल के तौर पर, मैंने एक बार दादी प्रकाशमणि को कहा कि यज्ञ का थोड़ा खर्चा कम करना चाहिए। मैंने सुझाव दिया कि भोजन में जो दो-दो सब्जियाँ बनती हैं, उसके बदले में एक सब्जी बने तो दूसरी पर जो खर्च होता है, वह बच जायेगा। तब दादी ने कहा, कइयों को शारीरिक समस्याओं के कारण कई चीज़ें खाने की परहेज होती है तथा कइयों को कुछ चीज़ें खाना पसंद नहीं होता, दो सब्जी होने से उनके पास दूसरी सब्जी की च्वाइस रहती है। वैसे भी सामान्य रीति से हरेक मनुष्य 450 ग्राम खाना खा सकता है तो दो सब्जी हों या एक सब्जी हो, खाने वाला तो 450 ग्राम ही खायेगा। इस प्रकार दो की बजाय एक सब्जी पकाने से कोई इकॉनामी नहीं होती है। थाली में दो सब्जी होने से यज्ञ का गौरव भी बढ़ता है और सबको अच्छा भी लगता है। इस प्रकार से यज्ञ कारोबार में सिर्फ इकॉनामी नहीं किंतु साथ-साथ मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी सोचना पड़ता है। यज्ञ कारोबार में झूठी इकॉनामी नहीं होनी चाहिए। ध्यान में रखें कि हर चीज़ में यथार्थ बात क्या है, उस आधार पर कारोबार करना चाहिए।

इसी संदर्भ में, थोड़े दिन पहले मैंने एक भाई को यज्ञ सेवार्थ शांतिवन से पांडव भवन, ज्ञान सरोवर जाने के लिए कार खरीदने की छुट्टी दी। उसने कार खरीदी फिर मेरे पास आकर कहा कि मेरा दिल खाता है कि मैंने यज्ञ का इस कार के लिए खर्च कराया तब मैंने उसको कहा कि दो प्रकार के खर्च होते हैं, एक आवश्यक और दूसरा

फिजूलखर्च। जैसे शरीर को चलाने के लिए खाना ज़रूरी है, शरीर को ढकने के लिए कपड़े की ज़रूरत है, ये आवश्यक खर्च हैं। इसी प्रकार से यज्ञ के विशाल कारोबार को करने के लिए कार की ज़रूरत है इसलिए हमने दादियों से पूछकर आपको कार खरीदने की छुट्टी दी है। इसलिए आवश्यक खर्च और फिजूलखर्च के बीच की जो लक्ष्मणरेखा है, उसका ध्यान रखिए। मैंने उन्हें बताया कि दादी प्रकाशमणि जी कई बार कहती थीं कि इस दुनिया में हरेक मनुष्य को ज़रूरत (Need) जितना मिल सकता है किंतु लालच (Greed), फैशन के पीछे खर्च करने का सामर्थ्य सबके पास नहीं होता। अंग्रेज़ी में कहते हैं, Need base economy एवं Greed base economy के बीच का जो फर्क है, उसे समझना ज़रूरी है। इस प्रकार से हम अपना कारोबार करें तो बहुत अच्छा होगा।

दुनिया में इस प्रकार के कारोबार के सफल संचालन के लिए बहुत से कोर्सेज चलते हैं और दुनिया के बड़े-बड़े उद्योगपति अपने कारोबार के लिए ऐसे पढ़े-लिखे व्यक्तियों को नौकरी पर रखते हैं। तो क्यों न हम भी ईश्वरीय कारोबार के संचालन के निमित्त समर्पित भाई-बहनों को इस प्रकार की ट्रेनिंग दें कि वे यज्ञ रक्षक बन यज्ञ कारोबार को चलायें।

ईश्वरीय कारोबार में कई ऐसी बातें हैं जिनका हमें ध्यान रखना पड़ता है। मिसाल के तौर पर, भारत में कोई भी प्रकार का खर्च या संपत्ति उधार या किश्तों पर लेने के लिए बाबा छुट्टी नहीं देते। जबकि दुनिया में तो सब जगह पर किश्तों में या बैंक से लोन लेकर ही कारोबार होता है। विदेश में जो भी संपत्ति खरीदी जाती वह अक्सर करके किश्तों पर ही खरीद की जाती है तो मैंने अव्यक्त बापदादा से पूछा कि आप विदेश में किश्त पर खरीदने की छुट्टी देते परंतु भारत में नहीं, ऐसा क्यों? तो बाबा ने मुझसे पूछा, तुम्हारी राजधानी सतयुग में कहाँ होगी? मैंने कहा कि राजधानी तो भारत में ही होगी। फिर बाबा ने कहा कि भारत के लिए ईश्वरीय सेवा के कानून विदेश से भिन्न हैं क्योंकि बाबा नहीं चाहते, हम कर्ज़ पर भारत में कारोबार करें। विदेश की कारोबार पद्धति वहाँ की संस्कृति और सभ्यता अनुसार है और विदेश का कारोबार भी द्वापर के बाद शुरू होने वाला है इसलिए देश और विदेश के आर्थिक व्यवहार में फर्क है।

ईश्वरीय कारोबार में हम किसी से कोई चीज़ मांगते नहीं क्योंकि बाबा ने सिखाया है कि मांगने से मरना भला। इन सब बातों की जानकारी दैवी परिवार के मुख्य भाई-बहनों को होनी ही चाहिए।

वास्तव में, हमारा संगमयुगी कारोबार सतयुगी श्रेष्ठ कारोबार से बहुत मिलता-जुलता है। हम जो कारोबार अभी संगम पर करते हैं, उसका प्रभाव आगे चलकर सतयुगी कारोबार में भी रहेगा। इसी तरह से अंतिम समय के कारोबार की रूपरेखा भी हमें मालूम रहे तो हम अंतिम समय की सेवा और कारोबार के लिए तत्पर रहेंगे। अंत समय जब सारी दुनिया में हाहाकार होगा, उस समय हम अपना कारोबार करते हुए अन्य आत्माओं का बुद्धियोग परमात्मा में लगाकर उन्हें वर्सा दिलाने के निमित्त बनेंगे। ईश्वरीय कारोबार में दो बातें ध्यान रखने की हैं कि हम यज्ञ रक्षक भी हैं और साथ-साथ संदेशवाहक बच्चे भी हैं। बाबा की ज्ञान-योग की शिक्षा हरेक को देना हमारा आध्यात्मिक और नैतिक फर्ज़ है, साथ ही तीव्र पुरुषार्थ करके अपने जीवन को भी श्रेष्ठ बनाना है। ❖

**दैहिक प्यार पश्चाताप प्रदान करता है इसलिए रूहानी स्नेह का ही लेन-देन करो।**

# 'पत्र' संपादक के नाम

'ज्ञानामृत' आत्मा को शुद्ध करने में बहुत मददगार है। जून अंक में प्रकाशित 'मानव और पेड़' लेख के द्वारा लेखिका ने आत्माओं को विशेष अमृत पिलाया है। आपने समझाया कि साइलेंस में हँसी-खुशी से पेड़ दूसरों की सेवा करता रहता है। हर दिन देने का कोई न कोई नया तरीका निकाल ही लेता है। सब वेदनाओं को भी मुसकराके सह लेता है। लेकिन मानव समाज? आपने कहा कि कितना आश्चर्य है, मानव स्वयं तो खुशबू नहीं दे पाता लेकिन खुशबू देने वाले के कार्य में भी बाधा डालता है। सचमुच ही पेड़ मानव से भी ऊँचा सेवाधारी है। उम्मीद है कि यह लेख हम सबको मीठे बाबा के सपूत बच्चे, गुणवान बच्चे बनाकर, विश्व में खुशबूदार किरण फैलाने की उमंग को आगे बढ़ायेगा।

**– देतसुं स्वर्गीयारी,**
**कोकराझार (आसाम)**

---

जुलाई अंक में प्रकाशित 'विवेक को नष्ट करता है क्रोध' लेख का मंथन किया तथा यह पाया कि यह लेख क्रोधी व्यक्तियों के लिए मार्ग प्रशस्त करता है। इसमें क्रोध के कारण, नुकसान एवं उपाय सभी बताये गये हैं जिन्हें व्यक्ति जीवन में उतार कर अपनी आदतों में पनपते ज़हर पर अंकुश लगाकर शान्तिमय जीवन जी सकता है।

**– जे.एल.राठी, जोधपुर**

---

मुझे एक स्नेही भाई द्वारा ज्ञानामृत मासिक पत्रिका पढ़ने को मिली, जो ज्ञान का सागर है। इसमें सभी छोटे-बड़े लेख ज्ञानवर्धक हैं। 'धैर्य रखें, हिम्मत न छोड़ें' व 'बाबा ने जीना सीखा दिया' लेखों ने ज्ञान का उजाला जीवन में भर दिया। मैं ज्ञानामृत के सभी भाई-बहनों की सराहना करता हूँ कि वे लोग हम पाठकों तक ज्ञान का प्रकाश फैला रहे हैं।

**– पंकज कुमार शर्मा,**
**जिला बिजनौर**

---

'बच्चों को कोकशास्त्र की नहीं, योगशास्त्र की शिक्षा मिले' पढ़कर अन्तरात्मा तृप्त हो गई। परमसत्ता पारलौकिक पिता शिव बाबा सर्व आत्माओं की उन्नति के लिए प्रजापिता ब्रह्मा के तन में प्रविष्ट होकर पिछले 74 वर्षों से ब्रह्मचर्य (पवित्रता) का पाठ पढ़ा रहे हैं। विश्व के सर्व माता-पिता इन महावाक्यों पर अमल करें तो घर में बच्चे और फिर सारा विश्व ही सुखमय हो जायेगा।

**– सूरज भान,**
**दिल्ली (डेरावाल)**

दिसंबर 2009 अंक में 'संगठन चलाने की विधि' बहुमूल्य लेख पढ़ा। लेखक ने छह ज्ञान बिन्दुओं द्वारा अति उत्तम और सरल शब्दों में महत्त्वपूर्ण प्रेरणा प्रदान की है जिससे मनुष्य, संगठन के पारस्परिक संबंधों की मिठास, मन की शान्ति और सुकून से लाभान्वित हो। इस तरह के लेख ज्ञानामृत पत्रिका सदा प्रकाशित करती रहे, ऐसी शुभकामना है।

**– ब्र.कु. वासुदेव, अचलपुर कैम्प**

---

ज्ञानामृत एक उच्चस्तरीय पत्रिका है। इसको पढ़कर मैं खुद को गौरवान्वित एवं भाग्यशाली महसूस करता हूँ।

**– डॉ. मनीष, जोधपुर**

---

ज्ञानामृत जुलाई अंक में 'प्रश्न हमारे, उत्तर आपके' स्तंभ में दादी जी द्वारा दिये गये सभी प्रश्नों के उत्तर बहुत ही ज्ञानवर्द्धक और मन को हल्का कर देने वाले हैं। 'विवेक को नष्ट करता है क्रोध' लेख में 'क्रोध भयंकर भूत है और यह हमारे सुख, शान्ति, प्रेम, खुशी व संतुष्टता रूपी सर्वश्रेष्ठ खज़ानों को समाप्त कर देता है' यह शिक्षा लौकिक जीवन में धारण करने योग्य संजीवनी समान है। संपादक भाई, संपादकीय शैली के लिए बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के सभी लेख तपती आत्माओं पर शीतल फुहार समान प्रतीत होते हैं।

**– रोजी रतड़ा, फरीदाबाद**

# जब प्रभु ने मुझसे ब्याह रचाया

• ब्रह्माकुमारी स्मिता, बागडोगरा (पं. बंगाल)

अंग्रेजी साहित्य में एम.ए., एम.फिल. करने के बाद सन् 1995 में एक बैंक अधिकारी के साथ मेरा विवाह हुआ लेकिन शादी के कुछ ही महीनों में मुझे यह अहसास हो गया कि पति-पत्नी के जिस प्यार भरे पवित्र रिश्ते की लोग दुहाई देते हैं, वह पूरी तरह शारीरिक है और काम-विकार की कमज़ोर नींव पर टिका है। इसी वजह से विवाह टूट रहे हैं या फिर मजबूरन निभाये जा रहे हैं। मेरी गृहस्थी भी इससे कुछ भिन्न नहीं हुई। एक बच्ची की माँ बन गई पर मन का हमेशा प्यासा रहने वाला कोना सच्चे, निश्छल, पवित्र प्रेम की खोज करता रहा। फिर मैं अध्यात्म की ओर मुड़ी। बच्ची की देखभाल और घर के काम-काज निपटा कर जो भी समय निकलता, मैं संत-महात्माओं की किताबें लेकर बैठ जाती। उनमें परमहंस योगानंद, स्वामी विवेकानन्द, रामकृष्ण परमहंस आदि प्रमुख थे। भक्ति का रंग इतना चढ़ गया कि मैं सब कुछ भूलकर प्रभु मिलन के सपने देखने लगी। भगवान से साक्षात्कार की विनती करती, रोती-गिड़गिड़ाती पर इच्छा पूरी न हुई।

### सेवाकेन्द्र के शान्तिपूर्ण वातावरण की खींच

जब हम उड़ीसा के एक छोटे-से शहर में रह रहे थे, तब जून 2005 में बाबा ने निमित्त बहनों को हमारे फ्लैट में भेजकर मेरी जैसी कई औरतों को सात दिन का कोर्स कराया और राजयोग सिखलाया। घर के पास सेन्टर होने के कारण मैं वहाँ अक्सर जाने लगी। बहनों का स्नेह और सेन्टर का शान्तिपूर्ण वातावरण मुझे खींच लेता, फलत: भक्तियोग का संगठन स्वत: ही छूट गया।

### योग में बहाए आँसू

बहनों ने कहा, आप थोड़ा और जल्दी उठें और अमृतवेले योग करें। मैं तीन-सवा तीन बजे ही जाग जाती और कॉमेन्ट्री लगाकर योग करने की कोशिश करती। परंतु उस आरंभकाल में अमृतवेले योग में मैंने सिर्फ आँसू ही बहाये। कभी प्रेम के आँसू तो कभी अफसोस के। मुझे दुख इस बात का था कि मुझे बाबा का परिचय बरसों पहले क्यों नहीं मिला? जीवन के इतने बरसों में मैंने अज्ञानतावश जाने कितने पाप कर डाले!

### खोया प्रियतम मिला

अब मुझे यह बोध हो चुका था

कि संसार की सारी आत्मायें नारी ही हैं और परमात्मा ही एकमात्र पुरुष। आज तक मेरी आत्मा सिर्फ उन्हीं के मिलन के लिए छटपटा रही थी। कुछ महीने अमृतवेले योग करने के पश्चात् बाबा और मैं एक-दूसरे के नज़दीक आ गये। मुझे उनके ज्योतिरूप के सिवा कोई नहीं जँचता। बाबा का मेरे जीवन में आगमन ऐसे हुआ जैसे मरुभूमि में फुहार पड़ गई हो, उजड़े चमन में बहार आ गई हो। साक्षात्कार, दिव्य दृश्य और अलौकिक अनुभवों से मेरे दिन भरने लगे। **बाबा के प्रेम और सुख की ऐसी वर्षा हुई कि जन्मों की प्यासी मैं आत्मा तृप्त हो गई। आत्मा को अपना खोया प्रियतम पुन: मिल गया।**

उन दिनों मेरी माँ मेरे पास आई हुई थी। एक बार किसी बात से क्रोधित होकर मैंने अपनी नौ-दस

साल की बेटी पर हाथ उठा दिया। माँ मुझसे बहुत नाराज़ हो गई, कहने लगी, क्रोध का त्याग किये बिना कोई ईश्वर के समीप नहीं जा सकता, झूठी है तुम्हारी भक्ति, ढोंग करती हो तुम। मैं जानती थी, मैंने ग़लत किया है। मैं आँखों में आँसू भरकर छत पर चली गई और आसमान की ओर देखकर सोचने लगी, बाबा, क्या माँ ने सच कहा? क्या मेरा प्यार झूठा है?

### शिवबाबा ही असली माता-पिता है

और तब आसमान जैसे फट गया। एक श्वेत, उज्ज्वल ज्योतिपिंड आकाश में चमकने लगा और उसमें से सफेद लंबी-लंबी किरणें आकर छत पर मेरे सामने पड़ने लगी। लगा, जैसे बाबा कह रहे हों, चाहे कोई न समझे, मैं समझता हूँ तुम्हारी भावनाओं को। मेरे साथ मेरे चार साल के बेटे ने भी यह दृश्य देखा। इस घटना से मुझे अहसास हो गया कि हमारे असली माता-पिता शिवबाबा ही हैं। इसलिए दिल की बातें इतनी आसानी से समझ गये।

मैं ज्ञानमार्ग पर अकेली ही चल रही थी। पति ने कभी मुझे योग करने से या सेन्टर पर जाने से नहीं रोका पर स्वयं ज्ञानमार्ग पर चलने को तैयार नहीं हुए। उन्हें पान, गुटखा खाने की बुरी लत थी। बहनों से पूछकर योग-बल से मैंने उन्हें व्यसन से मुक्ति दिलाई। इससे उनके मन में बाबा पर थोड़ा विश्वास जमने लगा।

### शान्ति और खुशी बढ़ने लगी

मुझमें तो काफी परिवर्तन आ गए। चिड़चिड़ापन कम हो गया, उदासी दूर हो गई और मैं शान्त और खुश रहने लगी। धैर्य बढ़ने लगा। हमारे बीच के झगड़े काफी कम हो गये। अब वे भी मेरे साथ 'बाबा-बाबा' कहने लगे लेकिन जब मैं सेन्टर जाने के लिए कहती तो वे अपनी व्यस्तता दिखाकर टाल जाते।

प्यारे बाबा मुझे वक्त से पहले ही हर घटना से अवगत करा देते। जब मुझ पर कोई विपत्ति आने को होती तो खूबसूरत मच्छरदानी या छाते का दृश्य दिखाकर सुरक्षा देने का वायदा कर जाते। चिन्ता की बात होती तो मकड़ी का जाला दिखाकर सावधान कर देते और कोई खुशखबरी होती तो सुन्दर से सुन्दर फूलों का दृश्य दिखाते। आने वाले सतयुग और देवी-देवताओं के दृश्य भी अक्सर दिखाते। कभी ज्योतिरूप में साक्षात्कार भी कराते। इस तरह हमारा प्रेम प्रगाढ़ होता गया। जिस वासनामुक्त प्रेम के लिए मैं वर्षों से तड़प रही थी, वो मुझे मिल गया। इस प्रेम में रोमांस था पर विकार नहीं; गहराई थी लेकिन अपेक्षायें नहीं। कभी उनके मिलन से मेरे रोम-रोम में विद्युत प्रवाहित हो जाती। **सोते समय मैं अक्सर उनकी बाँहों में झूलते हुए ही सोती। अतीन्द्रिय सुख में मेरे दिन गुजरने लगे। घर में खुशहाली छाने लगी।** मेरे पति अब मेरा और ज्यादा ही ख्याल रखने लगे। मेरी सहेलियाँ अक्सर मुझसे इस सुख-शान्ति का राज़ पूछती। तब मैं उन्हें राजयोग सिखलाती। मैं जानती थी, आज जो भी सुख मुझे मिल रहा है, वो सिर्फ बाबा की कृपा है। उन्होंने मेरा घर भी भौतिक सुख-साधनों से भर दिया। बचपन की अनेक दबी इच्छाओं को एक-एक कर पूरा कर दिया। नहीं मिली तो सिर्फ एक ही चीज़, पवित्रता।

### पतिदेव मानने लगे कहना

योग में पाँच स्वरूपों का अभ्यास मुझे बहुत कठिन लगता था परन्तु बाबा ने मुझे एक-एक स्वरूप का व्यवहारिक अनुभव करा दिया। मुझे याद है, उन दिनों मैं इष्ट देवी दुर्गा की शक्तियों का प्रबल रूप से अनुभव कर रही थी। पतिदेव मेरे सामने एकदम दुर्बल हो गए। मेरा हर कहा मानने लगे। तभी एक रोज़, किसी बात से मैं उनसे नाराज़ हो गई। किसी भी तरह वे मुझे मना न सके। हारकर उन्होंने कहा, आज तुम जो कहोगी, मैं करूँगा। बस, तुम शान्त हो जाओ। मैं सोचने लगी, अब इनसे मैं क्या माँगूँ? तभी बाबा ने संकेत दिया,

इनसे कहो कि तुम्हारे साथ हफ्ते में कम से कम दो बार मुरली क्लास में जायें। मैंने यही बात पतिदेव के सामने रख दी। वे तैयार हो गये। उस दिन मेरे जीवन का एक नया अध्याय शुरू हुआ। हम दोनों ही सुबह-सुबह सेन्टर जाने लगे।

धीरे-धीरे उन्हें मुरलियाँ समझ में आने लगी और अच्छी लगने लगीं। लेकिन जहाँ पवित्रता की बात आती तो वे लाचार हो जाते। मैं अमृतवेला योग के लिए उकसाती लेकिन बैंक में 10-12 घंटे काम करके वे इतना थक जाते कि अमृतवेले उठना असंभव लगता।

### अबला होने का अहसास

पति की पदोन्नति हुई और उसमें बाबा ने उनकी बहुत मदद की। इससे बाबा पर उनकी श्रद्धा और विश्वास और बढ़ गया लेकिन पवित्रता नहीं आई। दिन बीतने लगे। फिर आई वर्ष 2008 के 29 दिसंबर की वह पावन रात। अपनी आदत अनुसार, मैंने अपने मोबाइल से एक सहेली को ईश्वरीय संदेश भेजा और फिर सोचने लगी, पूरा एक साल हो गया, मेरे पति पूरी तरह से धारणायुक्त नहीं हो पाए हैं लेकिन बाबा पर उनका पूरा निश्चय तो हो चुका है। मांसाहारी भोजन का त्याग भी कर दिया है। फिर भी संबंध में पवित्रता नहीं आई है। सच है, आदमी से शादी करके नारी सिर्फ पतित ही बनती है। मुझे अपने इस नारी जन्म पाने का बहुत दुख होता था। अबला होने का अहसास होता था। फिर मन में आया, यदि परम पवित्र, पतित-पावन, परमपिता परमेश्वर से ही विवाह हो जाये तो?

### नारी होना सार्थक हो गया

मैंने उसी वक्त मोबाइल पर एक संदेश टाइप किया, 'Baba, Please marry me and sanctify me (बाबा, मुझसे शादी कर लो और मुझे पावन कर दो)।' उस रात तो गजब हो गया। **मैं गहरी नींद में थी, बारह-एक बजे का समय होगा। किसी ने जैसे मेरी आँखें खोल दी। मैंने देखा, मेरे सामने वाली दीवार पर दिव्य उजाला फैला था। थोड़ी देर बाद एक हाथ मेरी तरफ सिंदूर लिए बढ़ा। फिर उस हाथ ने मेरे माथे पर एक चुटकी सिंदूर लगा दिया और मुझे धन्य कर दिया।** उस रात मेरा नारी होना सार्थक हो गया।

### स्वाभाविक रूप से पवित्रता जीवन में आ गई

मैंने इस घटना का जिक्र पतिदेव से नहीं किया लेकिन बाबा से कह दिया कि आज से मेरी सुरक्षा का जिम्मा आपका हुआ। उसके बाद असंभव संभव हो गया। न कोई प्रतिज्ञा, न कोई प्रयत्न। हमारे बीच एकदम स्वाभाविक रूप से पवित्रता आ गई। मेरे पति, मेरे पवित्र युगल बन गए और मेरा मन उनके प्रति श्रद्धा से भर गया।

### कमज़ोर नारी को बना दिया शिव शक्ति

मुझे आज तक अपने ललाट पर बाबा की उंगलियों का स्पर्श दिन में कई-कई बार अनुभव होता है। रक्षा कवच की तरह पल-पल वे मुझे सुरक्षा प्रदान करते हैं। एक कमज़ोर नारी को उन्होंने इस तरह शिव-शक्ति बना दिया। जब मैं आत्मविश्वास से भर गई, उन्होंने मुझे यहाँ के एक केन्द्रीय विद्यालय में नौकरी दिला दी। कभी विद्यालय, कभी आस-पड़ोस तो कभी सगे-संबंधियों में से वो किसी-किसी को चुन लेते हैं और मुझे इशारा कर देते हैं। मैं निमित्त बनकर उसे राजयोग सिखा देती हूँ। जब तक तन में साँस है, बाबा के बिछुड़े हुए बच्चों का मिलन उनसे करा सकूँ, बस यही कामना है। उनकी बाँहों में समाने से पहले अपने आपको संपूर्ण बना लूँ, बस यही चाहत है।

आज की इस तमोगुणी सृष्टि में, जहाँ बच्चा देह-अभिमान में पल रहा है, घर-घर में विकारों का राज्य है, वहाँ पति-पत्नी के बीच पवित्र आत्मिक प्रेम की स्थापना हो सकती है तो केवल और केवल ईश्वरीय शक्ति के सहयोग से। ❖

# समायोजन की शक्ति

• ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

एक बार एक महिला ने अपनी सखी को पत्र लिखा कि मैं सास बनने वाली हूँ, मुझे किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए। सखी ने बहुत सुन्दर उत्तर दिया, मीठी बहन, अगर हम बाज़ार से नई कुर्सी खरीदकर लाते हैं तो उसे रखने के लिए जगह बनानी पड़ती है, यदि नई कटोरी खरीदकर लाते हैं तो कई पुरानी कटोरियों को खिसकाकर जगह बनानी पड़ती है, बहू तो चेतन प्राणी है, उसके लिए भी जगह बनानी पड़ेगी, घर में भी और दिल में भी।

### उदारदिल रखने में ही भलाई है

उपरोक्त कथन कितना सत्य है! कोई व्यक्ति अपनी जगह से उखड़कर हमारे पास आ गया तो उसे समाने और उसके साथ समायोजन करने के लिए हमें अपने पुराने ढर्रे से थोड़ा हिलना तो पड़ता ही है। यदि हम कहें, हम तो जैसे थे, वैसे ही रहेंगे, ज़रा भी नहीं हिलेंगे तो वह नया व्यक्ति अपने को सेट करने की कोशिश में कई बार हमसे टकरा सकता है। यदि हम टक्कर नहीं चाहते, उसे साथ भी रखना चाहते हैं तो थोड़ा खिसकने में और उदारदिल से उसे अपनाने में ही भलाई है।

### छोटी से निवृत्त, बड़ी में प्रवृत्त

किसी ने ठीक कहा है, If you don't say 'no' to small things you are never able to say 'yes' to big things. भावार्थ यह है कि यदि हम छोटी बातों से अपने को निवृत्त नहीं करते तो बड़ी बातों में प्रवृत्त कैसे हो पाएँगे? आज से 30 साल पहले, जब हम 20 साल के थे, अपने निवास स्थान की कुछ ज़िम्मेवारियों का निर्वहन किया करते थे। अब एक 20 वर्ष का नया सदस्य हमारे साथ आ मिला। तो क्या अब भी हम 30 साल पहले वाली उन ज़िम्मेवारियों से चिपके रहें और उन्हें ढोते रहें, फिर हम 50 की उम्र में शोभा देने वाले कार्य कब करेंगे? यदि उस 20 वर्षीया को उसकी आयु के अनुसार सेवा नहीं मिलेगी तो निश्चित ही वह अपनी उम्र से बड़े या अपनी उम्र से छोटे कार्य करने की रुचि दिखायेगी या फिर कुछ सार्थक करने की बजाय व्यर्थ में समय बितायेगी। फिर वह बात भी हमें अच्छी नहीं लगेगी।

### विकारों को काटें, रिश्तों को क्यों काटें

जब उंगलियों के नाखून बढ़ जाते हैं तो हम उन्हें काट देते हैं पर उंगलियों पर कट नहीं लगने देते। बड़ी सावधानी बरतते हैं। अहंकार या अन्य कोई भी विकार बढ़ जाने पर क्या हम यही तरीका नहीं अपना सकते? बढ़े हुए विकार को अवश्य काटें पर रिश्तों को क्यों काटें? बुरी चीज़ के साथ अच्छी चीज़ क्यों कटे?

### अच्छा बना लीजिए

एक बार एक व्यक्ति ने भगवान से शिकायत की, **भगवान सबको आपने सब कुछ बढ़िया-बढ़िया दिया, मुझे ही अच्छे साथी-सहयोगी नहीं दिए। भगवान का जवाब आया, ऐसा मैंने जानबूझकर तुम्हारा भाग्य बनाने के लिए किया है क्योंकि भाग्यशाली वो नहीं होते जिन्हें सब कुछ अच्छा मिलता है, भाग्यशाली वो होते हैं जो मिलने वाली हर चीज़ को अच्छी से अच्छी बना देते हैं।**

### इस शरीर को सहन कर सकते हैं तो व्यक्ति को क्यों नहीं?

कई बार किसी व्यक्ति से हमारी बनती नहीं है, वो हमें अच्छा नहीं लगता। उसके भाव-स्वभाव से, व्यक्तित्व से या अन्य किसी पहलू से हम चिड़चिड़ाते हैं, उसे अपने से दूर कर देना चाहते हैं। वो हमारे मन में खटकता है। परंतु सोचने की बात है कि कई चीज़ें अच्छी ना होते भी हमें

बहुत भाती हैं। उन्हें हम सदैव साथ रखते हैं और कोई भी हालत में अपने से अलग नहीं करना चाहते। उदाहरण के लिए, बाबा ने हमें बताया है, हम सतयुग में देवी-देवता थे, श्रीलक्ष्मी-श्रीनारायण जैसा कंचन शरीर हमें प्राप्त हुआ था। परंतु आज श्रीलक्ष्मी या श्रीनारायण के चित्र के सामने बैठकर देखें तो क्या पायेंगे? उनकी आँखें कितनी सुन्दर पर हमारी तो मिची-मिची हैं, दृष्टि भी कमज़ोर हो गई है फिर भी ये आँखें प्रिय लगती हैं क्योंकि हम आत्मा का कार्य तो यही आँखें करती हैं। चित्र वाली सुन्दर होते भी किस काम की? **इसी प्रकार, हाथ में दर्द है, फिर भी उसे लिये-लिये हम घूमते रहते हैं, काटते तो नहीं, भले ही सारी रात मलना पड़े तो भी मलते हैं क्योंकि उसमें मेरापन है। वह दर्दीला हाथ ही अच्छा लगता है। चित्र वाला हाथ कितना भी सुन्दर और स्वस्थ हो, हमारे किस काम का! हमें तो इसी दर्दीले से काम चलाना है। यही बात दुखते घुटनों पर, हिलते दांतों पर और सारे शरीर पर लागू होती है। जब इस शरीर को सहन कर सकते हैं तो किसी दूसरे व्यक्ति को क्यों नहीं?**

### बातें समाने से बन जाते हैं मित्र

अपनों की बातें समाई जाती हैं, कोई दुश्मन लगेगा तो उसकी बात उठाई और उड़ाई जाती है। भगवान कहते हैं, आपका कोई दुश्मन नहीं है। सचमुच, हर कोई हमारा मित्र है। यदि कोई मित्र न भी हो और हम उसकी बात समा लें तो वह भी मित्र बन जायेगा परंतु बात उड़ाने से मित्र भी शत्रु बन जायेगा। लौकिक दुनिया में कोई बच्चा जब कार्य में उतावली करता है तो बड़े लोग कहते हैं, तुझमें समाई नहीं है क्या? **स्थूल बातों में जल्दबाजी करना या मुख से बिना सोचे बात मुख से निकाल देना या हाथ-पैर चला देना – ये समाने की शक्ति के ना होने के प्रतीक हैं।**

### प्रकृति में अद्भुत समाई

लोग धरती को माता कहते हैं। धरती में बहुत समाई है। मनुष्यों का भार भी सहन करती है, खोद-खाद भी सहती है, गंदगी-कूड़े के ढेर भी अपनी छाती पर सहन करती है। इसलिए किसी ने ठीक ही कहा है –

खोद-खाद धरती सहे,
काट-कूट बनराय
कटु वचन संत सहे,
और से सहे ना जाएँ।।

पेड़ अपने सिर पर कड़कती धूप सहता है पर दूसरों को शीतल छाया देता है। इसलिए आजकल कहते, बच्चा एक, पेड़ अनेक। मनुष्य दूसरे को छाया तो क्या देगा, वह तो अपने सिर छाया बनाने के लिए कई पेड़ों से छाया छीन लेता है। इसी स्वार्थ के कारण वह अकेला पड़ गया है। भगवान और प्रकृति दोनों के सुख भरे साथ का मोहताज हो गया है।

### व्यर्थ बातें हैं खट्टी डकारों जैसी

जिसका हाज़मा प्रबल होता है, उसका खाया हुआ तुरंत हज़म हो जाता है परंतु कमज़ोर हाज़मे वाले का खाया हुआ डकार आदि के रूप में बाहर आता रहता है। वो कहेगा, आज हज़म नहीं हुआ, बार-बार खट्टी डकारें आ रही हैं। जो मानसिक रूप से कमज़ोर होते हैं, उनके मन में भी कई बातें समाती नहीं हैं। खट्टी डकार की तरह पेट में घूमती रहेंगी या मुख के द्वारा बाहर भी निकलती रहेंगी। जैसे बार-बार डकार आने का असर दूसरों पर अच्छा नहीं पड़ता, इसी प्रकार जिसके मन और मुख पर ना हज़म हुई बातें बार-बार आती, वे भी दूसरों को डिस्टर्ब करते हैं। इसलिए समाना बहुत ज़रूरी है।

### गण को चलाना है तो पेट बड़ा रखिए

पहले जमाने में परिवार बड़े होते थे, लोगों के दिल भी बड़े होते थे, इसलिए परिवार में किसी की भी कमी-कमज़ोरी समा जाती थी। समाने के कारण ही वो संयुक्त रह पाते थे। इसलिए गणेश का पेट बड़ा दिखाते हैं। गणेश माना गण का

स्वामी। गण समूह को कहते हैं। समूह का लीडर बनने के लिए पेट (दिल) बड़ा रखना पड़े तभी तो भिन्न-भिन्न लोगों की भिन्न-भिन्न बातें अंदर जाकर हज़म हो जायेंगी, समा जायेंगी। दिल कमज़ोर या छोटा होगा तो कहेंगे, ये एक-दो की विराधी बातें कैसे सुनें, वो एक बात सुनाता है, दूसरा, दूसरी बात सुनाता है, मेरे लिए सुनना, समाना बड़ा मुश्किल हो गया है। जिसका दिल छोटा होता है, उसमें गई हुई बात भी बार-बार बाहर उछलती है, समाती नहीं है। छोटे बर्तन में रखा दूध, उफान से तुरंत बाहर निकल जाता है। यदि बड़ा बर्तन हो तो दूध उबलेगा तो भी इतना जल्दी बाहर नहीं गिरेगा। इसी प्रकार, कोई व्यर्थ सोचता है तो मानो अन्दर की व्यर्थ बात बार-बार उबाल खा रही है। अंदर इतनी गर्मी है कि अंदर की भाप बार-बार बाहर आ रही है। बड़े दिल वाला सब प्रकार की विरोधी बातों को भी सुनकर समा लेगा और स्वस्थ भी रहेगा।

### हदें हैं तो मैलापन आएगा

सागर में समाने की शक्ति होती है, बहुत विशाल है ना इसलिए सारा किचड़ा आ गिरा पर तल मैला नहीं हुआ। लेकिन कटोरे के थोड़े से पानी में तिनका गिरा, मिट्टी का छोटा कण गिरा तो सारा पानी मैला दिखने लगा, कटोरे में हद है ना! इसी प्रकार हद में रहने वाला व्यक्ति भी छोटी-सी बात सुनकर मन को मैला कर लेता है, उसके चेहरे पर निन्दा-स्तुति का असर तुरंत आता है पर जो बेहद है, सागर समान दिल है, उसके सामने बात आई और अदंर जाकर समा गई। उसे बात का पता है पर वो उसका बार-बार अंदर चिन्तन नहीं करता जो उसकी बदबू चित्त पर फैले।

### सबसे बड़ी कला

यदि मटके में कोने वाले कंकर डालेंगे तो थोड़े आयेंगे। गोल कंकर डालेंगे तो ज्यादा आयेंगे। इसी प्रकार जिस मनुष्य में विकारों रूपी कोने प्रबल होते हैं वह भी फैलकर रहना चाहता है, किसी के साथ समायोजन नहीं करता है। इसलिए आवश्यक है कि विकारों रूपी कोने झाड़ लिये जाएँ और सबके साथ मिलजुलकर रहा जाये। मिलजुलकर रहना ही जीवन जीने की सर्वश्रेष्ठ कला है।

### हर सेवा बड़ी है

कहा जाता है, पानी में समायोजन की गज़ब की शक्ति है। जिधर नीचा स्थान दिखाई दिया, उधर ही बहने लगता है। एक तरफ ऊँचा टीला है, पानी वहाँ चढ़ने का आग्रह करता ही नहीं, टीले को हटाया जाए, मेरे लिए जगह बनाई जाए, ऐसा ना कहकर वह टीले के चरणों में ठहर जाता है। चरणों में बैठने वाले को एक दिन जगह मिल ही जाती है। ईश्वरीय सेवा के लिए भी यही मूलमंत्र है। जिस समय जो सेवा सहज मिले, उसी को करने में कल्याण है। सामने वाली हम करें ना, दूर वाली मिले ना तो जीवन व्यर्थ चला जायेगा। सेवा, सेवा होती है और सेवक का कोई पद नहीं होता। कोई भी सेवा छोटी सेवा नहीं होती, कोई भी सेवक छोटा सेवक नहीं होता। सेवा करने वाला सदा बड़ा है। जो सेवा दिल से दुआयें निकलवाने के निमित्त बने, उसे करने वाला भगवान समान बन जाता है। ❖

**जिन्हें सच्चा वैराग होता है, वे अंदर से समझते हैं कि इस संसार में हमारा कुछ भी नहीं है क्योंकि शरीर तो पल में आत्मा से अलग हो जायेगा और शरीर के संबंधी, अर्थी को श्मशान तक पहुँचाकर उससे नाता तोड़ लेंगे। संपत्ति तो पहले से ही अलग थी, जो जीते जी ही कह देती है, तुम नहीं तो और सही, और नहीं तो और सही। तो साथी कौन बना? हमारा श्रेष्ठ कर्म, जनहित में किया गया त्याग, सेवा से प्राप्त दुआयें और परमात्मा शिव की मीठी-मीठी स्मृति – ये ही हमारे असली साथी हैं।**

# जीवन का स्वर्ण काल – युवा काल

• ब्रह्माकुमारी सुमन, अलीगंज (लखनऊ)

विकारों की कालिमा से दूर, दुनियादारी के झंझटों से परे, मतलबी, फरेबी, भ्रष्टाचारियों के चंगुल से मुक्त, हताशा, निराशा, उदासी की छाया से परे, हिंसा, कठोरता, कुटिलता व जड़ता से कोसों दूर, आनन्द से भरपूर, सच्चा मासूम जीवन बचपन को कहा जा सकता है। बाल्य अवस्था की इन्हीं विशेषताओं के कारण कई लोग जब दुखी होते हैं तो कहते हैं, मेरा सब कुछ कोई ले ले पर मेरा बचपन मुझे वापस ला दे या फिर कहते हैं, बचपन के दिन भी क्या दिन थे! पर बचपन सिर्फ अपने लिए होता है। इस उम्र में हम कोई पाप नहीं करते, हमें कोई दुख भी फील नहीं होता, हम किसी से नफरत व घृणा, ईर्ष्या भी नहीं करते, यह अति उत्तम बात है परंतु बचपन दूसरों पर आश्रित होता है। हम समाज का, माँ-बाप का कर्ज अदा करें, फर्ज निभायें, किसी को सुख दें, मदद कर सकें, ऐसा बचपन में नहीं होता।

### जितना चाहें, जमा कर सकते हैं

बचपन में बुराइयों का भी ज्ञान नहीं होता परंतु अच्छाइयों का भी तो ज्ञान नहीं होता। दूसरों से पालना लेने के कारण पुण्य का खाता कम होता जाता है। इस तरह, बचपन सिर्फ खर्च करने का समय होता है, पुण्य जमा करने का नहीं। लेकिन, युवाकाल वह स्वर्णिम काल है जिसमें हम जितना चाहें उतना जमा कर सकते हैं। भले ही भूत और भविष्य हमारे हाथों में नहीं होते हैं परंतु वर्तमान के आधार से भूत और भविष्य दोनों को सुधारा जा सकता है। युवाकाल को श्रेष्ठ बनायें तो बचपन व वृद्धावस्था दोनों ही ठीक हो जाते हैं।

### हर क्रान्ति के सूत्रधार हैं युवा

अगर हम इतिहास का अवलोकन करें तो कुछ अपवादों को छोड़कर जितनी भी क्रांतियाँ हुई, लीक से हटकर कुछ हुआ, विश्वविख्यात परिवर्तन हुए, वे युवाओं ने ही कर दिखाये। अगर किसी ने जीवन के चौथे दौर में भी कुछ किया तो भी उसका संकल्प युवाकाल में ही लिया गया था, कार्य विराट होने के कारण संपूर्ण होते-होते युवाकाल बीत गया। क्रांतिकारियों का एवं खेल जगत का तो सारा का सारा क्षेत्र ही युवा जीवन पर निर्भर होता है। विवेकानंद, शंकराचार्य, महात्मा बुद्ध, ईसामसीह, राजा राममोहन राय, झांसी की रानी, सुभाषचंद्र बोस, भगतसिंह, चंद्रशेखर आजाद, जेम्सवाट, ध्यानचन्द आदि सभी अपने जमाने के शीर्ष रहे। ऐसे कहाँ तक नाम गिनायें जिन्होंने अपनी सफलता का परचम नीले आसमान तक फैलाया, कारण? विराट इरादे, अदम्य साहस, प्रबल पुरुषार्थ की ललक, दृष्टि में लक्ष्य की चमक, बुलंद हौसले, सितारों को छूने की तमन्ना, तूफानों का रूख मोड़ देने की क्षमता, खतरों से खेलने की हिम्मत, सागर को थाह लेने की अटूट ललक, मंजिल को प्राप्त करने का जज़्बा, कुछ कर दिखाने का अविरल प्रयास, कठोर परिश्रम, मर मिटने का जुनून, परीक्षाओं का आह्वान आदि अनेकों विशेषताएँ। इन विशेषताओं के कारण युवावर्ग चोटी को फतह कर लेता है।

### चाहिए जड़ों की मजबूती

संसार में हर कार्य के लिए युवा ही ढूँढ़ा जाता है। युवाकाल जीवन का वह स्वर्णिम काल है जिसमें हर प्रकार की सफलता सहज प्राप्त की जा सकती है इसलिए ही हर जगह युवाओं की मांग सौ प्रतिशत रहती

है। मज़दूर से लेकर नेता तक, फैक्ट्री से लेकर कृषि तक, नौकरी, बिजनेस, राजनीति से लेकर धर्मनीति तक, गवर्मेन्ट से लेकर भगवान तक, हरेक को तलाश युवा की ही है। सेना में तो युवाकाल के बाद छुट्टी ही कर दी जाती है। **युवा जीवन सफलता की चोटी पर पहुँच सकता है पर चोटी पर कायम रहने के लिए एक पेड़ की तरह अपनी जड़ों को मजबूत रखना होता है, नहीं तो थोड़ा-सा भी ध्यान इधर-उधर हुआ, डगमग हुए तो सीधे नीचे।**

## स्वयं को बचाना है आकर्षणों से

युवाकाल एक ऐसे चौराहे के समान भी होता है जिसको समझकर पार कर ले तो निष्कंटक, निर्विरोध रूप से वह लक्ष्य की ओर बढ़ता जाता है। जिस प्रकार दीपक को जाग्रत रखने के लिए उसे तूफान से बचाकर रखना होता है, इसी प्रकार युवाकाल में मुख्यत: सात अवरोध आकर्षण के रूप में आते हैं। ये माया के रूप फँसाने के लिए आते हैं। युवाओ, इन्हें पहचान कर इनसे बचना ही होगा, नहीं तो ये अवरोध ऐसे खड़े हो जाते हैं कि मन रास्ता बदलने के लिए सोचने लगता है। पहले तो कोई भी आकर्षण सुखदायी लगता है लेकिन यह सब मृगतृष्णा समान दुख जनित बीज होता है, जो सीधे दुखों के सागर में डुबोता है या फिर समस्याओं के पहाड़ के नीचे दबाता है। मानो मुश्किलों एवं उलझनों की खाई में धकेलता है या दिलशिकस्ती या हीन भावना के दलदल में धंसाता है। या तो आवेश या आवेग की ज्वाला भड़काता है या पश्चाताप व चिन्ता की अग्नि में जलाता है। जिन सात बातों से आप अपने को बचायें, वे इस प्रकार हैं –

**1.कुसंग –** युवाओ, इस मायावी रूप को पहचानने में सबसे अधिक धोखा होता है क्योंकि इसकी शुरूआत संग से होती है। संग कब कुसंग बन गया, पता ही नहीं पड़ता। इसलिए पहले से ही सावधान रहो तो सबसे अच्छा। **इस उम्र में देह का आकर्षण, पुरुष या स्त्री की चर्म का आकर्षण एक ऐसी मीठी तलवार है जो सारे पुण्य काटकर रख देती है जिसके लिए कहावत है कि संग तारे, कुसंग बोरे। बुराइयों की जड़ कुसंग से ही होती है। इसलिए युवाओ सावधान! जिस प्रभु का साथ पाने के लिए लोगों ने अपनी राजाई छोड़ी, सुख-सुविधाओं का त्याग कर वन गमन किया, हठ-तप-जप किये पर फिर भी प्रभु का साथ न मिला, अब जबकि आपको उसका साथ मिला है तो सिर्फ और सिर्फ उसका ही साथ कीजिए। मनुष्यों का साथ भले करें पर सच्चा साथी न बनायें, न बनें। संबंध निभायें पर बंधन न पालें। देह का आकर्षण ही अन्य आकर्षणों का जन्मदाता है।**

**2.व्यसन –** व्यसन कोई भी हो, सभी दुखदायी हैं। यह बुराई एक ऐसी कैंची है जो न सिर्फ संबंधों की गरिमा को काट कर रख देती है बल्कि हमारी बुद्धि की शक्ति को भी काट कर रख देती है, खासकर निर्णय व परख शक्ति को। व्यसन की शुरूआत खुशी की तलाश में होती है पर जीवन पर्यन्त व्यसनी खुशी की ही तलाश में भटकता रहता है। खुशी की परछाई भी उससे कोसों दूर रहती है, फिर सच्ची खुशी का तो कहना ही क्या? इसलिए युवाओ, व्यसनों के धोखे को समझो और ब्रह्मा बाप के जीवन को खोलकर कहीं से भी देख लो। पता पड़ जायेगा कि हमें जीवन में क्या करना है और क्या नहीं करना है।

**3.आधुनिकता –** आधुनिकता को अगर हम फैशन का नाम दें तो ज्यादा ठीक लगेगा। आधुनिक ज़माने का हवाला देकर, बनावटीपन को ओढ़कर, स्मार्ट दिखने की चाहना भले ही अल्पकाल की संतुष्टि प्रदान करती हो पर केवल तब तक, जब तक आप अपनी वाणी पर विराम लगाये हुए हैं। बाह्य पर्सनैलिटी तभी तक प्रभावशाली है जब तक आप चुप हैं। गांधी जी की सुन्दरता जग

ज़ाहिर है। मदर टेरेसा जैसी सुंदरता तो सारी दुनिया में अभी तक किसी को नहीं मिली और इन दोनों की सुन्दरता ने अनेक लोगों को भी सुन्दर बनाया। इनकी सुन्दरता जीवन के अंतिम पड़ाव तक निखरती गई, चाहे मुँह में दांत नहीं थे, सिर के बाल सफेद थे, चेहरे पर झुर्रियाँ थीं। भले ही उन्हें विश्व सुन्दरी का खिताब न मिला हो पर उनकी सुन्दरता आज भी लोगों के मानस पटल पर अंकित है। युवाओ, **फैशन एक ऐसा कुआं है जिसमें खुद तो गिरते ही हैं, दूसरों को भी गिराने के निमित्त बनते हैं। किसी भी उलटी चाल का अनुसरण करना, बुद्धिहीनता का ही प्रतीक है। धारा से अलग चलने की हिम्मत जिनमें नहीं होती, वे फैशन के अनुयायी बनते हैं। देखिए, नहर के लिए रास्ता बनाया जाता है, तालाब खोदे जाते हैं परंतु नदी अपना रास्ता खुद बनाती है और सागर भी स्वत: बने होते हैं इसलिए जो महिमा नदी व सागर की है, वह नहर व तालाब की कभी भी नहीं होती। फैशन एक शारीरिक आकर्षण है जो सिर्फ विकार ही पैदा करता है। अगर इसमें फँसे तो फैशन का फंदा, श्रेष्ठ जीवन के लिए फाँसी का फंदा बन जायेगा।** यह विलासितापूर्ण जीवन, भोगी जीवन कहलाता है। इसलिए इससे सदा खबरदार रहो।

(क्रमश:)

# मैली चादर ओढके कैसे..

**विजय गुप्ता, जयगांव**

**श**रीर आत्मा का मंदिर है। इस शरीर को ऋषि-मुनियों ने नश्वर माटी की भी संज्ञा दी है। जब हम संसार में आये थे, तो शरीर भी और उस आवरण में लिपटी हुई आत्मा भी उज्ज्वल थी। ज्यों-ज्यों इस शरीर (काया) की आयु बढ़ती गई और जन्म-पुनर्जन्म के चक्कर में आते गए, त्यों-त्यों देह-अभिमान के प्रभाव से काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की प्रवेशता ने आत्मा को मलीन कर दिया। मनुष्यात्मा स्वयं को और परमात्मा को भूलती चली गई और दुखों के सागर में गोते खाने लगी। एक प्रसिद्ध गीत की पंक्तियाँ इस प्रकार हैं –

**'मैली चादर ओढ़के कैसे द्वार तुम्हारे आऊँ,**
**हे पावन परमेश्वर मेरे, मन ही मन शरमाऊँ**
**तूने मुझको जग में भेजा निर्मल देकर काया**
**आकर के संसार में मैंने इसको दाग लगाया**
**जन्म-जन्म की मैली चादर कैसे दाग छुड़ाऊँ।'**

यहाँ चादर शब्द आत्मा का प्रतीक है। संसार का कोई भी साबुन इस आत्मा रूपी चादर को स्वच्छ नहीं कर सकता सिवाय प्रभु की याद के, प्रभु शरण के, प्रभु समर्पण के। प्रभु की शरण लेने के लिए स्वयं के भीतर झांककर स्वयं को बदलना पड़ेगा और स्वयं को सरल करना पड़ेगा। दूसरा कोई उपाय नहीं है। संसार में सबसे अधिक पुरुषार्थ का कार्य है स्वयं को बदलना, स्वयं के अंत:करण को शुद्ध करना और स्वयं के दृष्टिकोण को सकारात्मक करना। जो यह कला सीख जाता है, निश्चित ही उसके जीवन में प्रभु-प्रेम का आलोक फैल जाता है। यह कला भी हमें परम कलाकार प्रभु द्वारा ही सिखाई जा रही है।

आत्मा के शुद्ध होने से ही जीवन दिव्य बनता है, मनुष्य कौड़ी से हीरा बनता है, जीवन में अलौकिक क्रान्ति घटित होती है। यही जीवन की सर्वश्रेष्ठ साधना और सार्थकता है। आत्मा की शुद्धता के विषय में कहा गया है – **चाहे कर ले तीर्थ सारे, चाहे दे ले दान रे।**
**जब तक आत्मा शुद्ध ना होवे, तब तक नहीं कल्याण रे।**

धन्य हैं वे जो इसी वर्तमान संगमयुग पर स्वयं को परिवर्तन कर प्रभु के प्रिय बन उनके दिव्य खजाने, प्रेम, शांति, खुशी, संतुष्टता के अधिकारी बन जाते हैं और प्रभु-प्रेम की लहर विश्व के कोने-कोने में फैलाते हैं। ❖

# सकारात्मक सोच एवं बेहतर नज़रिया

• जे.एल.राठी, जोधपुर

व्यक्तित्व के विकास में, जीवन के निर्माण में, मुसीबतों का सामना करने में, अपने संबंधों और खुशहाली को बरकरार रखने में अगर किसी की सबसे बड़ी भूमिका है तो वह है आदमी की सकारात्मक सोच। सकारात्मक सोच अमृत है, नकारात्मक ज़हर है। मनुष्य का मन ज़हर भी उगलता है और अमृत भी। जो दूसरों की नकारात्मकताओं के ज़हर को हँसते हुए पी जाते हैं, वे घर-परिवार और समाज में नीलकंठ महादेव बना करते हैं। **खुद को नकारात्मकताओं से बचाओ और दूसरों की नकारात्मकताओं को हँसते-मुसकराते हुए झेल जाओ, यही आत्म-विजय है।**

### सकारात्मक सोच को बना लें व्रत

सदा यह समझें कि सकारात्मक सोच मेरा धर्म है, मेरा पुण्य है, मेरी प्रतिष्ठा है, मेरा दीप है, मेरा व्रत है, मेरा संकल्प है, मेरा नज़रिया है। सोच अगर सकारात्मक है तो मैं और आप – सब सफल हैं। इसलिए जीवन में मंत्र बनाइये – मैं सकारात्मक सोचूँगा, सकारात्मक बोलूँगा, सकारात्मक व्यवहार करूँगा, सकारात्मक जीऊँगा। सकारात्मक सोच – यह मंत्र भी है और तंत्र भी। यह शक्ति भी है और प्रगति भी। यह श्वास भी है और विश्वास भी। **सकारात्मक का मतलब है अपने हर उत्पाद को और बेहतर बनाने की कोशिश। सकारात्मक का अर्थ है बड़ों की डांट को सहजता से लेना और छोटों की ग़लतियों को माफ करने का बड़प्पन दिखाना।** सकारात्मक के मायने हैं गिलास को खाली नहीं, हमेशा आधा भरा हुआ देखना। किसी की कमी को देखना नकारात्मकता है और किसी के गुणों को देखना सकारात्मकता है।

### पत्थर क्यों उठाया जाए?

कहते हैं कि दो ऑफिसर्स के बीच में किसी बात को लेकर कहा-सुनी हो गई। इस पर दूसरे ऑफिसर ने पहले ऑफिसर के मुख पर थूक दिया। स्वाभाविक है कि कोई हम पर थूकेगा तो हमें गुस्सा तो आयेगा ही पर पहला ऑफिसर अच्छी सोच और अच्छे नज़रिये का आदमी था। वह पास में ही रखे हुए कोल्ड वाटर की टंकी के पास गया, एक गिलास पानी निकाला, मुँह पोंछा और वापस अपने ऑफिस में चला गया। उसके साथी ने पूछा, उसने तुम पर थूका, क्या तुम्हें गुस्सा नहीं आया? ऑफिसर ने कहा, बुरा तो ज़रूर लगा पर मेरे पॉजिटिव थिंकिंग के मंत्र ने मुझे तत्काल प्रेरित किया कि जो काम पानी से निपट सकता है, उसके लिए पत्थर क्यों उठाया जाए।

यह है हर समस्या का समाधान। आप भी सकारात्मक सोचिए और सकारात्मक देखिए। अगर आप ऐसा कर लेते हैं तो जीवन की नब्बे प्रतिशत समस्याओं का समाधान करने में खुद समर्थ हो जायेंगे।

### बुरा मत सोचो

किस्मत को सुधारना है तो चरित्र को सुधारें। चरित्र को सुधारना है तो व्यवहार को सुधारें। व्यवहार को सुधारना है तो वाणी को सुधारें। अगर व्यवहार और वाणी को सुधारना है तो सोच को सुधारें। पहले गाँधीजी ने तीन बंदरों के माध्यम से जीवन का संदेश दिया था लेकिन वर्तमान वैज्ञानिक युग में चार बंदरों के माध्यम से इस संदेश को समझें – बुरा मत सोचो, बुरा मत देखो, बुरा मत सुनो एवं बुरा मत बोलो। जब तक हम बुरा सोचते रहेंगे तब तक बुरा देखेंगे भी, सुनेंगे भी एवं बोलेंगे भी। लेकिन बुरा सोचना बंद कर दें तो शेष तीनों चीज़ों पर अंकुश

अपने आप लग जायेगा।

### क्षण भर की सकारात्मक सोच का चमत्कार

जीवन में क्षण भर की भी सकारात्मकता सुन्दर परिणाम दे सकती है, इसके लिए रामायण (भक्तिमार्ग के शास्त्र) से प्रेरणा लीजिये। कहते हैं, लंका पर चढ़ाई के लिए समुद्र पर सेतु का निर्माण होने लगा। लंका में बेहिसाब दहशत फैल गई। लोग चर्चा करने लगे कि राम के नाम में भी कैसी ताकत है, राम नाम अगर पत्थर पर लिख दिया जाये तो वह तैरने लगता है। जब नाम में इतनी ताकत है तो स्वयं राम में कितनी ताकत होगी! रावण ने भी पत्थर पर अपना नाम लिखकर उसे तैराया तब प्रजा आश्चर्यचकित हो गई कि यह कैसे हुआ। मंदोदरी ने रावण से सवाल किया तो रावण ने कहा, पत्थर पर नाम तो रावण लिखा गया था लेकिन जब पत्थर को समुद्र में छोड़ा गया तो मैंने कहा, हे पत्थर, तुम्हें राम की सौगंध है अगर तुम डूब गये तो, बस, पत्थर पानी पर तैरने लगा। आशय यह है कि एक क्षण भर के लिए रावण की सोच राम के प्रति सकारात्मक हुई, जिसका यह परिणाम हुआ। यदि सारा जीवन सकारात्मक हो जाये तो कितना चमत्कार हो जाए?

**आदमी अपने हाथ में खिंची हुई लकीरों को मिटा तो नहीं सकता लेकिन अपनी मानसिकता को बेहतर बनाकर अभाव में भी श्रेष्ठ स्वभाव का आनन्द ले सकता है। मानसिकता को बेहतर बनाएँ, भाग्यदशा अवश्य बदलेगी।**

एक कहता है, पौधे पर काँटे लगे हैं; दूसरा कहता है, पौधे पर कलियाँ फूट आई हैं; दोनों के नज़रिये में क्या फर्क है? समझिए और अपना नज़रिया ठीक कीजिए। ❖

## गॉड ने दिलवाया गोल्ड मैडल

**ब्रह्माकुमार कोमल, चंडीगढ़**

**बा**बा का ज्ञान मिलने के बाद फिल्में देखना, दोस्तों के साथ समय खराब करना, ये सब सहज ही छूट गया और इतना सकारात्मक परिवर्तन आ गया जो मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था। फिर तो सारा समय कॉलेज की पढ़ाई, ज्ञान-योग और सेवा में ही व्यतीत होने लगा। राजयोग के अभ्यास से एकाग्रता में तो वृद्धि हुई ही, साथ-साथ पढ़ाई में भी रुचि बढ़ गई। इंजीनियरिंग पूरी होने के बाद मेरी नौकरी लग गई। एक दिन हमारे विभागाध्यक्ष का फोन आया कि आपने पी.टी.यू. में बी.टेक. सी.एस.सी.आई.टी. में टॉप किया है, आप इंटरनेट में चैक कर लें। पहले तो मुझे विश्वास ही नहीं हुआ कि यह भी हो सकता है। फिर चैक किया तो उनकी बात बिल्कुल सच निकली। इसके बाद पी.टी.यू. में दीक्षान्त समारोह में मुझे गोल्ड मैडल से सम्मानित किया गया। पी.टी.यू. में टॉप करना मेरे लिए संभव नहीं था पर राजयोग और शिवबाबा के साथ ने संभव कर दिया।

स्वभाव बहुत कोमल होने के कारण मैं बहुत जल्दी छोटी-छोटी बातों से प्रभावित हो जाता था और कार्यालय में भी डर लगा रहता था कि मैनेजर कुछ कह न दे। डर के कारण काम अच्छी तरह जानते हुए भी, ठीक ढंग से कर नहीं पाता था। **अब राजयोग के अभ्यास से बाबा ने इतना शक्तिशाली बना दिया है जो ऑफिस में भी निर्भय होकर काम करता हूँ। प्रैक्टिकल में अनुभव किया कि सहनशीलता, निर्णयशक्ति, धैर्य आदि दिव्य गुण राजयोग के अभ्यास से सहज ही धारण हो जाते हैं।** एक समय था जब मैं कंपनी का बहुत ही कमज़ोर कार्यकर्त्ता था और अब मुझे उत्तम कार्यकर्त्ता का पुरस्कार मिला है। इसका सारा श्रेय बाबा को जाता है। दिल से सदा बाबा के लिए शुक्रिया निकलता है। ❖

# मजबूत संगठन

• ब्रह्माकुमार विकास, दिल्ली (परमपुरी)

'संगठन' शब्द सुनते ही मजबूती का अहसास होता है। इसका सन्धिच्छेद करें तो 'संग' और 'ठन' दो शब्द बन जाते हैं जिनका अर्थ है, संग चलने की जहाँ ठन जाए अर्थात् जहाँ यह ठान लिया जाये कि चाहे कुछ भी हो, हम संग ही रहेंगे।

**संगठन अर्थात् मानव शृंखला**

मूल रूप से संगठन चुंबकीय सिद्धान्त की तरह चलता है। चुम्बक के दो कोण होते हैं, उत्तर व दक्षिण। दोनों एक-दूसरे के विपरीत होते हैं पर उत्तर, दक्षिण से जुड़ कर एक शृंखला का निर्माण करते हैं। हम सब भी अलग-अलग परिवार, संस्कार, व्यवहार व दृष्टिकोण से आकर संगठन में जुड़ते हैं। कई बार हमारा व्यवहार संगठन के लोगों से नहीं मिलता, फिर भी हम उससे जुड़े रहते हैं। संगठन में हम दोस्ती का हाथ न बढ़ाकर चुम्बक की तरह दायें हाथ से बायां हाथ जोड़ते हैं और बनाते जाते हैं मानव शृंखला। **दायां हाथ शक्ति का प्रतीक है और बायां हाथ थोड़ा कमजोर पड़ जाता है। इस शृंखला में हम एक-दूसरे का हाथ थामकर यह अहसास दिलाते हैं कि जहाँ पर तुम्हारा बायाँ हाथ है अर्थात् जहाँ तुम कमजोर हो, वहाँ पर मेरा दायां हाथ है। दोस्ती में हम दायें से दायां हाथ मिलाते हैं, जो समानता दर्शाता है परंतु संगठन एक टीम की तरह कार्य करता है, जहाँ हर एक को अलग-अलग ज़िम्मेवारियाँ मिली होती हैं।** जिस तरह हाथ में पाँच उंगलियाँ जुड़कर, हथेली बन एकजुटता का प्रमाण देती हैं, उसी तरह संगठन को मज़बूत बनाने के लिए पांच बातों का होना अनिवार्य है।

**1. नेतृत्व :–** किसी भी संगठन को चलाने में एक कुशल प्रशासक का होना बहुत ज़रूरी है जो इतनी सारी विचारधाराओं एवं संस्कारों को साथ लेकर चल सके। हथेली बंद करने पर अंगूठा चारों अलग-अलग आकार वाली अंगुलियों को कवर कर देता है और उन्हें सहलाकर एकजुटता का अहसास दिलाता है। संगठन में भी ताकतवर एवं कमज़ोर हर तरह के व्यक्ति जुड़ते हैं। कुशल प्रशासक सबको प्यार से सहलाकर रखता है। किसी को भी अपनी कमज़ोरी के कारण हीनता का और ताकत के कारण अहम् का अहसास ही नहीं होने देता। नेतृत्व करने वाले व्यक्ति का व्यक्तित्व इतना प्रभावशाली हो कि जिसे देखकर सबमें समर्पण की भावना उत्पन्न हो जाये। वो उस चंद्रमा की तरह हो जो अपने धीमे प्रकाश से अपने सारे तारों को चमकाता है, सब पर एक समान रोशनी डालता है। ऐसा लगता है कि आकाश में चंद्रमा मध्य बिन्दु बन सब तारों को संगठित कर एकसूत्र में बांधे हुए है।

**2. सुरक्षा :–** कोई व्यक्ति संगठन में तब तक जुड़ा रह सकता है जब तक कि वह स्वयं को सुरक्षित समझता है। जब हम प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय से जुड़े तो भगवान ने हमें यह सुरक्षा दे दी कि बच्चे, तुमने मुझे पहचाना है, अब तुम सतयुग में ज़रूर आओगे, पद चाहे जो भी हो। इस सुरक्षा से अंदर ही अंदर इतनी खुशी मिली कि हमारे व्यवहार, संस्कार एकदम परिवर्तित हो गये। हम स्वयं को सुरक्षित समझने लगे और किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं रही। बस एक ख्याल रहता है कि बाबा का नाम रोशन हो जाये। सुरक्षित व्यक्ति ही संगठन में अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान दे सकता है। विभीषण रावण का छोटा भाई था। रावण इतना शक्तिशाली था, फिर भी विभीषण ने राम की शरण ली क्योंकि वह स्वयं को रावण के पास सुरक्षित नहीं समझता था।

**3. सम्मान :– मुख्यत: किसी भी संगठन में बिखराव का मूल कारण सम्मान की कमी ही होता है। किसी भी व्यक्ति व संगठन से हम तब किनारा करते हैं जब हमें लगता है कि हमारा सम्मान नहीं है पर**

**ईश्वरीय मार्ग पर तो बाबा मुरली शुरू करने से पहले ही 'मीठे बच्चे' संबोधित कर हमें सम्मानित करते हैं।** उस सम्मान का नशा सारे दिन रहता है। यह सम्मान ही था जो कर्ण को दुर्योधन से अलग न कर सका। पाण्डवों का ज्येष्ठ भ्राता होते हुए भी उसे कौरवों की सेना में रहकर युद्ध करना पड़ा। वो दुर्योधन के सम्मान का अंतिम श्वास तक ऋणी रहा। हमें भी संगठन में रहते हुए हर एक की छोटी-छोटी भावनाओं एवं विचारधाराओं को सम्मान देना है।

**4. प्रोत्साहन :–** संगठन में उत्साह लाने के लिए एक-दूसरे को प्रोत्साहित करते रहना चाहिए जिससे संगठन को नवीनता मिलती रहे और कोई भी दिलशिकस्त न हो। प्रोत्साहन मिलने से हर व्यक्ति स्वयं को निखार सकता है। बाबा भी हमें रोज़ मुरली में बताते हैं कि बच्चे, तुम मुख्य पार्टधारी आत्मा हो। तुम्हारे दिखाये मार्ग पर ही सबको चलना है।

**5. योगदान :–** संगठन के किसी भी कार्य में हर व्यक्ति का योगदान बहुत ज़रूरी है जिससे संगठन स्वत: ही एकत्रित हो जाता है। यादगार शास्त्र में दिखाते हैं कि भगवान ने सबकी उंगली लगवाकर गोवर्धन पर्वत को उठा दिया। हमें भी हर कार्य में सबकी सेवा का योगदान लेना ज़रूरी है, फिर चाहे वो सेवा तन से हो, मन से हो या धन से हो। योगदान की शक्ति संगठन में एक तरह से रक्त प्रवाह का काम करती है। योगदान देने वाले को भी महान कार्य सम्पन्न होता देख खुशी होती है कि इसमें हमारा भी योगदान है।

कोई भी संगठन जब एक परिवार का रूप ले लेता है तो सभी सदस्यों में स्वयं ही एक-दूसरे के प्रति स्नेह उत्पन्न हो जाता है। परिवार संगठन से भी ऊपर है। संगमयुग में हमें संगठित होकर चलना है, तभी हम देवताई परिवार (सतयुग) में पहुँच पायेंगे। ❖

## बाबा रखते ध्यान हैं

**रामेश्वर प्रसाद रावत, आगरा**

सच तो यह है मीठे बच्चों का, बाबा रखते सदा ध्यान हैं।
उनकी शक्ति दूर करती है, चिंतन के अवरोधों को
आत्म-शक्ति जागृत हो जाती, करती नष्ट विरोधों को
पावन हो जाता है मानव, बीज प्रेम के बो जाते हैं।
भाव स्वच्छ होने लगते हैं, काम-क्रोध सब खो जाते हैं
दीपक अंधकार हरता है, बाबा देते दिव्य ज्ञान हैं
सच तो यह .....

मूल्यवान उनकी शिक्षा से, महामानव ढाले जाते हैं
राजयोग से चिंतन करके, दया-प्रेम पाले जाते हैं
देवतुल्य मानवगण बनता, सम्राटों के सिर झुकते हैं
धर्म-समाज-राष्ट्र के उलझे प्रश्नों के उत्तर मिलते हैं
हर प्राणी की पीड़ा हरके, समुचित करते समाधान हैं
सच तो यह .....

लाभ-हानि का असर न होता, राग-द्वेष भी खो जाता है
लोभ-मोह का पता न चलता, आत्म-ज्ञान जब हो जाता है
बाबा शक्ति दें प्राणी की पीड़ा को हर लेने में
तूफानों में भी मानवता की नौका को खेने में
फसल पकाने सत् प्रवृत्ति की, सबका रखते सदा मान हैं
सच तो यह .....

स्वत: समझते हैं बिन बोले, वे भावों की वाणी को
छद्म वेश में छिपी असुरता की हर कुटिल कहानी को
पर जो सहज निष्कपट होकर, आबू पर्वत आते हैं
मीठे बच्चे खुश होकर के, मधुबन के फल खाते हैं
बाबा की मुरली धुन भाई, सारे सुखों की खान है
सच तो यह .....

**'मैं' और 'मेरा', 'तू' और 'तेरा' इन चार शब्दों ने ही संपूर्णता से दूर किया है। इन शब्दों को संपूर्ण मिटाना है इसलिए हर बोल में सिर्फ बाबा, बाबा और बाबा ही निकले।**

# कैदी है तन, आजाद है मन

'मन एव बन्धन-मोक्ष कारणम्' अर्थात् मन ही बंधन और मोक्ष का आधार है, इस कहावत के अनुसार कारागार में बंद कैदी भी जब राजयोग अनुभूति कर लेता है तो उसका तन ही कैद रह जाता है, मन तो स्वतंत्र उड़ानें भरने लगता है। वाराणसी जेल में बंद सैकड़ों कैदियों के ऐसे ही अनुभव हैं। वे कहते हैं, अब हमने बदले की भावना त्याग दी है, बदलकर दिखाने का दृढ़ संकल्प कर लिया है। भावनाओं के आवेग में, विकारों के आवेश में, अहंकार के नशे में, कुसंग के प्रभाव में, व्यसनों की अधिकता से व्यक्ति का अंतर्विवेक मारा जाता है और वह अकरणीय कार्यों को कर बैठता है। ईश्वरीय ज्ञान से विवेक पर पड़ी अज्ञानता की यह मोटी परत उतर जाती है और व्यक्ति की सुधार प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है। उसके भीतर से बदलाव की आवाज़ें उठने लगती हैं, अन्दर की सुषुप्त आध्यात्मिक शक्ति अंकुरित होकर कर्मों में आने लगती है और वह आंतरिक आनन्द में झूमने लगता है। मन के द्वारा डाली गई बेड़ियाँ कट जाती हैं और व्यक्तित्व के आंतरिक हिस्से की धुलाई होकर विचारों में उच्चता, पवित्रता, सकारात्मकता की चमक आने लगती है। ऐसा ही हुआ है बनारस जेल में बंद उन 250 कैदियों के साथ। इन कैदियों के दिलों में स्वपरिवर्तन की जो आवाज़ उठी है, वह सिर्फ जेल की चारदीवारी तक ही सीमित नहीं, समाज को भी प्रेरित करने वाली दस्तक है। 'जो बदलेगा, वह जीतेगा' यह कहावत सुनी-सुनाई बातों का हिस्सा नहीं है वरन् कैदियों ने इसे जीवन की वास्तविकता में ढाल दिया है। ब्रह्माकुमारी सुरेन्द्र बहन तथा ब्रह्माकुमार रामगोविन्द भाई की अध्यक्षता में, प्रशासन के सहयोग से ब्रह्माकुमारीज़ राजयोग शिक्षण संस्थान जेल में ही चलाया जा रहा है। कैदियों के जीवन में आए सकारात्मक बदलाव से प्रसन्न होकर प्रशासन ने आध्यात्मिक शिक्षण के लिए सुविधायें भी प्रदान की हैं इसलिए कैदी भाई प्रशासकों तथा निमित्त बी.के. भाई-बहनों के प्रति कृतज्ञता का भाव दिल में समाये रूहानी यात्रा में आगे बढ़ रहे हैं। कुछ अनुभूतियाँ उनकी अपनी कलम से ... – सम्पादक

### जेल में परमात्मानुभूति

*वाराणसी के रविशंकर सिंह कहते हैं–*

मैं और मेरा परिवार धार्मिक और पूर्ण शाकाहारी है। 'सत्य कभी पराजित नहीं हो सकता' – मेरी यह धारणा उस समय टूट गई जब 7 अगस्त, 2009 को मुझे और मेरे पिताजी को आजीवन कारावास की सज़ा हो गई। जीवन निराश और लक्ष्यविहीन हो गया।

जब केन्द्रीय कारागार, वाराणसी पहुँचा तो दीवार पर लिखे सुन्दर श्लोकों को पढ़कर प्रभावित हुआ और अगले ही दिन डरते हुए उस स्थान पर जा पहुँचा जहाँ लिखा था 'प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय।' यह स्थान अपनी सुन्दरता और पवित्रता की वजह से बरबस अपनी ओर आकर्षित कर रहा था। मैं वहाँ जाता रहा और धीरे-धीरे अशान्त मन को शान्ति मिलती रही। यहाँ परमात्म ज्ञान की ऊँची पढ़ाई निमित्त बी.के. सुरेन्द्र बहन जी व रामगोविन्द भाई से प्राप्त कर

रहा हूँ। ईश्वरीय उच्च ज्ञान जीवन में अद्भुत परिवर्तन कर चुका है। परमपिता परमात्मा से मिलन का अनुभव नित्य करता रहता हूँ। सच कहूँ तो यह कारागार मुझे वानप्रस्थ आश्रम के समान लगती है। यह स्थान मेरे लिए तपस्या स्थली बन गया है। जेल से निकलने के बाद इस अद्भुत परमात्म ज्ञान को जन-जन तक पहुँचाना ही मेरे जीवन का मुख्य उद्देश्य होगा। अब मैं बदला नहीं लूँगा, बदलकर दिखाऊँगा।

### शिव बाबा मिला तो सारा जहान मिल गया

*बलरामपुर निवासी राजेन्द्र कुमार वर्मा कहते हैं –*

मैं वाराणसी जेल में अनपढ़, जाहिल, गंवार के रूप में आया। जेल में चलने वाले स्कूल में पढ़ने लगा। सब नशे, गंदा खान-पान और मनमानी करना यही मेरा पूर्व का जीवन था। इसी मनमानी के कारण धारा 302 के अंतर्गत अपराध हो गया और मैं जेल में आ गया। जेल में आकर भी मुलाकातियों से उलटा बोलता रहा पर जब 'ओमशान्ति' का अर्थ समझा, सात दिन का कोर्स किया और ज्ञान समझ में आने लगा तब नशा आदि सब छूट गया। अब मैं आनन्द से रहता हूँ, पढ़ता हूँ और योग भी लगाता हूँ। किसी भी प्रकार की अब चिन्ता नहीं है। यह सब बाबा की देन है जो हमको सभी कुरीतियों से छुटकारा मिल गया। जैसे आत्मा ज्योतिबिन्दुस्वरूप है, वैसे बाबा भी ज्योतिबिन्दुस्वरूप है। शिव बाबा मिला तो सारा जहान मिल गया।

### कैदी होना सौभाग्य बन गया

*कानपुर निवासी भीमशंकर त्रिवेदी कहते हैं –*

ट्रक दुर्घटना के कारण जेल आना पड़ा। मैं बिल्कुल टूट चुका था। नकारात्मक सोच और असहाय परिस्थितियों के कारण जीवन को समाप्त करने का निर्णय ले चुका था। घरवालों द्वारा मेरे छुड़ाने के सारे प्रयास विफल हो रहे थे। समय की ऐसी विडंबना मैं पहली बार देख रहा था। इस अविश्वास भरी दुनिया में किसको मददगार समझूँ, कैसे मेरा कल्याण हो सकेगा, इस प्रकार की अनेक शंकायें-कुशंकायें मन में मंडरा रही थीं। मेरे दुर्भाग्य ने मेरे भाग्य को कुचल दिया था।

परंतु मेरे जीवन में शुभ घड़ी तब आई जब मैं जेल के प्रांगण में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के संपर्क में आया और क्लास करने लगा। कुछ ही दिनों में अशान्त मन में शान्ति का संचार होने लगा। जीवन में नया मोड़ आया। नये अलौकिक जीवन का शुभारंभ हुआ, अद्भुत अनुभूतियाँ हुईं, जीवन के सारे प्रश्न ही हल हो गये। मैं यह जान सका कि यहाँ मेरा आना पूर्व निश्चित था। यह जीवन अनेक जन्मों के कर्मों का परिणाम है। राजयोग की पढ़ाई के द्वारा परमात्म मिलन की अनुभूतियाँ होने लगी हैं। अब मैंने प्रतिज्ञा की है और यही जीवन का उद्देश्य बनाया है कि श्रेष्ठ संकल्पों द्वारा समाज को नई दिशा दूँ ताकि इस परमात्म ज्ञान से आज के अशान्त और निराश संसार को जीने की कला मिल सके। मैं अब अपने जीवन से पूर्णतया प्रसन्न और संतुष्ट हूँ।

### बदले की नहीं, अब बदलने की है चाहत

*आजमगढ़ के राजनारायण कहते हैं –*

हँसते-खेलते परिवार को लेकर मैं बहुत सुखी था। ज़मीन के मामले में पड़ोसी से विवाद हुआ और क्रोध ने जेल पहुँचा दिया। सज़ा मिलने के बाद भी बदला मेरी बाकी ज़िन्दगी का मकसद बन गया था लेकिन यहाँ आने के बाद आध्यात्मिक माहौल ने सोच बदल दी। अब बदला नहीं, खुद को बदलने की ठान ली है।

### हम अच्छे नागरिक बन सकते हैं

*अंबेडकर नगर के हीरालाल और देवरिया के हरिप्रसाद कहते हैं –* सच्चा ज्ञान तो जेल में आकर मिला और यह भी पता चला कि संयम-सेवा की बदौलत हम अच्छे नागरिक बन सकते हैं। क्रोध और अहंकार ने तो जेल की राह दिखाई जबकि जेल ने हृदय परिवर्तित कर नेक इंसान बना दिया।

(क्रमशः)

# दिव्य गुणों का अवतार – नारी

• ब्रह्माकुमार सुरेश जांगड़ा, जीन्द

जिस प्रकार भवन की मज़बूती उसकी मज़बूत नींव पर निर्भर करती है, उसी प्रकार, किसी भी राष्ट्र या राज्य की सुदृढ़ता वहाँ की गुणवान नारियों पर निर्भर करती है, बशर्ते कि उन्हें उचित सम्मान प्राप्त हो। जिस प्रकार धुरी के बिना पहिया नहीं चल सकता उसी प्रकार नारी के बगैर कोई राष्ट्र उन्नति के द्वार नहीं खोल सकता। यह बात हमारे घरों में भी लागू होती है। जिस घर में नारी का सम्मान नहीं, वह घर नरक के समान है। कवि मैथिलीशरण गुप्त ने अपनी कविता में लिखा था –

**अबला जीवन,**
**हाय तुम्हारी यही कहानी**
**आँचल में है दूध**
**और आँखों में पानी।**

वर्तमान समय में समस्त नारी जगत के लिए प्रेरणा स्त्रोत, भारतीय पुलिस में सर्वोच्च पद पर आसीन बहन किरण बेदी ने कहा है,

**सबला जीवन,**
**हाय तुम्हारी यही कहानी**
**आँचल में है कर्त्तव्य**
**और आँखों में है निगरानी।**

उसने यह सिद्ध भी कर दिखाया और कहा, यदि आज मैथिलीशरण गुप्त जी जिंदा होते तो मैं कविता से इन पंक्तियों को हटवा देती।

### प्राचीनकाल में नारी

प्राचीनकाल में कोई भी कार्य या धार्मिक अनुष्ठान नारी के बिना पूरा नहीं होता था। उनके लिए कोई भी क्षेत्र वर्जित नहीं था। वे रणभूमि में अपने जौहर दिखाया करती थी। उनकी शिक्षा-दीक्षा का समुचित प्रबंध था। मैत्री, गार्गी जैसी विदुषी नारियों की गणना ऋषियों के साथ होती थी। धीरे-धीरे, नारी की स्थिति में परिवर्तन होने लगा। उसे पर्दे में रखा जाने लगा। उसे पुरुषों के भोग और विलास की वस्तु समझा जाने लगा। उसका हर क्षेत्र में शोषण होने लगा। उससे शिक्षा तथा समानता के अधिकार छीन लिये गये। नारी की इसी दुर्दशा से संसार पतन की ओर चल पड़ा है। अब कलियुग का अंत नज़दीक लगता है। चारों ओर अशान्ति फैल रही है। सभी विश्व युद्ध से भयभीत हैं। **ऐसे समय में उन गुणों के प्रचार की आवश्यकता है जो नारी को परंपरा से प्राप्त हैं। वह सभी का सुख चाहती है, त्याग, शान्ति और ममता की देवी है, वह ऐसी शक्ति है जो असुरों का नाश करती है, नवनिर्माण करती है तथा मनुष्यों को देवत्व की ओर ले जाती है।** अगर यह क्रूर समाज नारी को प्रताड़ित न करे, उसे ज़िन्दा आग में न जलाये, उसकी अवहेलना न करे, उसकी अवमानना न करे, उसे घर की चारदीवारी में घुट-घुट कर मरने पर बाध्य न करे, उसे पददलित न करे, उसे अपने समान मानव समझे, उसकी भावनाओं की कद्र करे तो वह दिन दूर नहीं जब इस धरती पर रामराज्य स्थापित हो सकता है

### सहनशीलता का अथाह भण्डार है नारी

माचिस की तीली से हम चाहें तो भगवान के मंदिर में जाकर दीया जला सकते हैं और चाहें तो सारे संसार को आग भी लगा सकते हैं। तीली वही है लेकिन हमारे प्रयोग का तरीका अलग-अलग है। उसी तरह, नारी सतयुग में भी थी, आज भी है लेकिन हमने उसे समझा नहीं। हमारा उसे देखने का नज़रिया बदल गया, उसकी भावनाओं की कद्र करनी छोड़ दी, उसके प्रति व्यवहार बदल गया। इसलिए, हमारी वजह से वह नरक का द्वार बन बैठी। हमने सारा दोष उसके ऊपर मढ़ दिया। अपना पुरुषत्व बनाये रखने के लिए व अपने अभिमान को ठेस न पहुँचे सिर्फ इसी वजह से नारी को हर समय दोषी

ठहराया जाने लगा। लेकिन हम चाहें तो उसके माध्यम से स्वर्ग के द्वार खोल सकते हैं। वह हमें रास्ता दिखायेगी, रास्ते पर चलना सिखलायेगी तथा मंज़िल पर पहुँचा देगी। उसमें सहनशीलता का अथाह भण्डार है। उसमें त्याग की भावना है। नारी ही सभी प्रकार के आकर्षणों से दूर रहकर समाज की सेवा कर सकती है। आयरलैण्ड की मारग्रेट नामक बहन, स्वामी विवेकानन्द के विचारों से प्रभावित होकर, अपना देश छोड़कर स्वामी जी के साथ भारत-सेवा तथा दीन-दुखियों की सेवा में जुट गई। उनका नाम बाद में निवेदिता पड़ा। वे अपने सुकर्मों से इतिहास के पन्नों पर अपना नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखवा गई तथा आज की नारियों के लिए प्रेरणा स्त्रोत बन गई। किसी विद्वान ने सही कहा है –

**नारियों का सैलाब जिस ओर उमड़ जाता है,**
**इतिहास गवाह है, इतिहास बदल जाता है।**

### ईश्वरीय शक्ति कर रही है कार्य

समस्त संसार में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय ऐसी आध्यात्मिक संस्था है जिसे हमारी नारी बहनें ही चला रही हैं। **अनुशासन की दुनिया में यह एक मिसाल है। इतना बड़ा कार्यभार इन बहनों व माताओं के कंधों पर, जिसे सोचकर हम दांतों तले अंगुली दबाने पर मजबूर हो जाते हैं। सारी दुनिया के लिए ये बहनें प्रेरणा की स्त्रोत हैं। इसके पीछे ईश्वरीय शक्ति कार्य कर रही है, यह हमें मानना ही पड़ेगा। जिस मसीहा व अवतार की सारे जगत को ज़रूरत थी वह आ चुका है तथा हमारी बहनों व माताओं का खोया हुआ मान-सम्मान बहाल कर रहा है।** तो क्यों न हम इस आध्यात्मिक ज्ञान के सागर में गोते लगाकर अपने गृहस्थ आश्रम को स्वर्ग बनायें, जीवन को कमल पुष्प के समान पवित्र बनायें। ब्रह्माकुमारियों के माध्यम से स्वयं भगवान ज्ञान प्रकाश फैला रहे हैं। **ब्रह्माकुमारियाँ भगवान के महावाक्यों को जन-जन तक पहुँचाकर स्वर्ग के द्वार खोल रही हैं। इसलिए 'नारी स्वर्ग का द्वार' यह कथन सौ प्रतिशत सत्य है।** ऐसी पवित्र नारी को हमारा शत शत प्रणाम! अंत में नारी के सम्मान में कुछ पंक्तियाँ –

**जीवन मरू में शीतल जलधार है नारी**
**विधाता की सृष्टि का शृंगार है नारी।**
**यह बहना है, माता है, निर्माता है, पूजनीय सर्वदा**
**दिव्यगुणों का देहधारी अवतार है नारी।।**

## जीवन जीएं ऐसे

**ब्र.कु. घमंडीलाल अग्रवाल,**
**गुड़गाँव**

लोभ, मोह, छल, दंभ बिसारें
जीवन जीएं सदा हम ऐसे।

तन में सेवाभाव निहित हो
मन में दिव्य भाव निहित हो
अधरों पर मीठी वाणी का
एक अनोखा चाव निहित हो

अंदर से जैसे भी हम हैं
दिखने में भी हों हम वैसे

दिन आरंभ हो शुभभावों से
पूरित रहें सद्भावों से
भेदभाव के बंधन तोड़ें
पाएं मुक्ति कामनाओं से

बाधाओं में मुस्काएं यूं
कमल खिले कीचड़ में जैसे।

शान्ति प्रेम का पढ़ें पहाड़ा
कटुताओं पर चले कुल्हाड़ा
दर-दर है खुशियों की दस्तक
मेलजोल का बजे नगाड़ा

पूरी उम्र विजय फिर होगी
देखें मिले पराजय कैसे।

छोटा-बड़ा नहीं है कोई
रोजाना क्यों पीड़ा ढोई
मानवता कब शेष रही यदि
पर दुख में ना बने सहाई

चलता है व्यापार स्नेह का
बिना स्वर्ण, चांदी या पैसे।

# शिवरात्रि ही..पृष्ठ 3 का शेष

कलियुग के पूर्णान्त से कुछ ही वर्ष पहले हुआ था जबकि सारी सृष्टि अज्ञानांधकार में थी। इसलिए 'शिव' के संबंध में रात्रि-पूजा का अधिक महत्त्व माना जाता है। श्रीनारायण तथा श्रीराम आदि देवताओं का पूजन तो दिन में होता है क्योंकि श्रीनारायण, श्रीराम आदि का जन्म तो सतयुग तथा त्रेतायुग रूपी दिन में हुआ था। मंदिरों में उन देवताओं को तो रात्रि में सुला दिया जाता है और दिन में ही उन्हें जगाया जाता है परंतु परमात्मा शिव की पूजा के लिए तो भक्त लोग स्वयं भी रात्रि को जागरण करते हैं।

आज इस रहस्य को न जानने के कारण कई लोग कहते हैं कि 'शिव तमोगुण के अधिष्ठाता (आधार) हैं, इसलिए शिव की पूजा रात्रि को होती है और इसलिए शिव की याद में शिवरात्रि ही मनाई जाती है क्योंकि रात्रि तमोगुण की प्रतिनिधि है।' परंतु उनकी यह मान्यता बिल्कुल गलत है क्योंकि वास्तव में **शिव तमोगुण के अधिष्ठाता नहीं हैं बल्कि तमोगुण के संहारक अथवा नाशक हैं।** यदि शिव तमोगुण के अधिष्ठाता होते तो उन्हें 'शिव', 'पापकटेश्वर' और 'मुक्तेश्वर' कहना ही निरर्थक हो जाता क्योंकि शिव का अर्थ ही कल्याणकारी है जबकि तमोगुण अकल्याणकारी, पापवर्धक और मुक्ति में बाधक है। अत: वास्तव में शिवरात्रि इसलिए मनाई जाती है कि परमात्मा शिव ने कल्प के उपान्त में अवतरित होकर तमोगुण, दुख और अशान्ति को हरा था। यही कारण है कि शिव का एक नाम 'हरा' भी है। शंकर के गृहांगण में बैल और शेर तथा मोर और सांप को इकट्ठा दर्शाने वाले चित्र भी वास्तव में इसी रहस्य के परिचायक होते हैं कि शिव तमोगुण, द्वेष इत्यादि को हरने वाले हैं, न कि उनके अधिष्ठाता।

### 'महाशिवरात्रि' है शिव के कर्त्तव्य की यादगार

शिवरात्रि अथवा महाशिवरात्रि के बारे में एक मान्यता तो यह है कि इस रात्रि को परमपिता परमात्मा शिव ने महासंहार कराया था और दूसरी मान्यता यह है कि इस रात्रि को अकेले ईश्वर ने अम्बा इत्यादि शक्तियों से संपन्न होकर रचना का कार्य प्रारंभ किया था। परंतु प्रश्न उठता है कि शिव तो ज्योतिर्लिंगम और अशरीरी हैं, वे संहार कैसे और किस द्वारा कराते हैं और नई सृष्टि की स्थापना कैसे कराते हैं तथा स्थापना की स्पष्ट रूपरेखा क्या है?

प्रसिद्ध है कि ज्योतिस्वरूप परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा सतयुगी सतोप्रधान सृष्टि की स्थापना और शंकर द्वारा कलियुगी तमोप्रधान सृष्टि का महाविनाश कराते हैं। वे कलियुग के अंत में ब्रह्मा के तन में प्रवेश करके उनके मुख द्वारा ज्ञान-गंगा बहाते हैं। इसीलिए शिव को 'गंगाधर' भी कहते हैं और 'सुधाकर' अर्थात् 'अमृत देने वाला' भी। प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा जो भारत माताएँ और कन्यायें गंगाधर शिव की ज्ञान-गंगा में स्नान करती अथवा ज्ञान-सुधा (अमृत) का पान करती हैं वे ही 'शिव-शक्तियाँ' अथवा 'अम्बा', 'सरस्वती' इत्यादि नामों से विख्यात होती हैं। वे चेतन ज्ञान-गंगाएँ अथवा ब्रह्मा की मानसी पुत्रियाँ ही शिव का आदेश पाकर भारत के जन-मन को शिव-ज्ञान द्वारा पावन करती हैं। इसीलिए शिव 'नारीश्वर', 'पतित-पावन' तथा 'पापकटेश्वर' भी कहलाते हैं क्योंकि वे मनुष्यात्माओं को शक्ति रूपा नारियों अथवा माताओं द्वारा ज्ञान देकर पावन करते हैं तथा उनके विकारों रूपी हलाहल को हर कर उनका कल्याण करते हैं और उन्हें सहज ही मुक्ति तथा जीवन्मुक्ति का वरदान देते हैं।

साथ ही साथ, वे महादेव शंकर द्वारा कलियुगी सृष्टि का महाविनाश कराते हैं और उसके परिणामस्वरूप सभी मनुष्यात्माओं को शरीर से

मुक्त करके शिव-लोक को ले जाते हैं। इसलिए वे 'मुक्तेश्वर' भी कहलाते हैं। परंतु वे दोनों कार्य करते कलियुग के उपान्त में अज्ञान रूपी रात्रि ही के समय हैं।

### शिवरात्रि अन्य सभी जयन्तियों से सर्वोत्कृष्ट

**उपर्युक्त से स्पष्ट है कि शिवरात्रि एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण वृत्तांत का स्मरणोत्सव है। यह सारी सृष्टि की समस्त मनुष्यात्माओं के पारलौकिक परमपिता परमात्मा के अपने दिव्य जन्म अथवा अवतरण का दिन है और सभी को मुक्ति या जीवन्मुक्ति रूपी सर्वश्रेष्ठ प्राप्ति की याद दिलाता है। इस कारण यह अन्य सभी जन्मोत्सवों अथवा जयन्तियों की तुलना में सर्वोत्कृष्ट है क्योंकि अन्य सभी जन्मोत्सव तो मनुष्यात्माओं अथवा देवताओं के जन्मदिन की याद में मनाये जाते हैं जबकि शिवरात्रि मनुष्य को देवता बनाने वाले, देवों के भी देव, धर्मपिताओं के भी परमपिता, एकमात्र सद्गतिदाता परमप्रिय परमपिता के अपने दिव्य और शुभ जन्म का स्मरणोत्सव है।**

अन्य जो जन्मदिन मनाये जाते हैं, वे किसी विशेष धर्म या संप्रदाय के अनुयायियों के लिए महत्त्वपूर्ण होते हैं। उदाहरण के तौर पर श्रीकृष्ण जन्माष्टमी या श्रीरामनवमी को आदि सनातन धर्म के लोग ही अधिक महत्व देते हैं परंतु शिवरात्रि तो इनके भी रचयिता, सभी धर्मों को मानने वालों या न मानने वालों के भी पारलौकिक परमपिता परमात्मा का जन्मदिन है जिसे सारी सृष्टि के सभी मनुष्यों को बड़े चाव और उत्साह से मनाना चाहिए। परंतु आज मनुष्यात्माओं को परमपिता परमात्मा का परिचय न होने के कारण अथवा परमात्मा को सर्वव्यापी या नाम-रूप से न्यारा मानने के कारण शिव जयन्ती का महात्म्य कम हो गया है।

### शिवरात्रि मनाने की रीति

भक्त लोग शिवरात्रि उत्सव पर सारी रात जागरण करते हैं और यह सोचकर कि खाना खाने से आलस्य, निद्रा और मादकता का अनुभव होने लगता है, वे अन्न भी नहीं खाते ताकि उनके अन्न-त्याग से तथा जागरण से भगवान शिव प्रसन्न हों। परंतु मनुष्यात्मा को तमोगुण में सुलाने वाली और रुलाने वाली मादकता तो यह माया ही है अर्थात् पांच विकार ही हैं। जब तक मनुष्य इन विकारों का त्याग नहीं करता तब तक उसकी आत्मा का पूर्ण जागरण नहीं हो सकता और तब तक आशुतोष भगवान शिव उन पर प्रसन्न भी नहीं हो सकते। भगवान शिव तो 'कामारि (काम के शत्रु)' हैं, वे विकारी मनुष्य पर प्रसन्न कैसे हो सकते हैं?

दूसरी बात यह है कि फाल्गुन के कृष्ण पक्ष की चौदहवीं रात्रि को मनाया जाने वाला शिवरात्रि महोत्सव तो कलियुग के अंत के उन वर्षों का प्रतिनिधि है, जिनमें भगवान शिव ने मनुष्यों को ज्ञान द्वारा पावन करके कल्याण का पात्र बनाया, अत: शिवरात्रि का व्रत तो उन सारे वर्षों में रखना चाहिए। तो आज जबकि वह समय चल रहा है, **जबकि शंकर द्वारा इस कलियुगी सृष्टि के महाविनाश की सामग्री, एटम और हाइड्रोजन बमों के रूप में तैयार हो चुकी है और जबकि प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा परमात्मा शिव विश्व नवनिर्माण का कर्त्तव्य पुन: कर रहे हैं तो सच्चे शिव-प्रेमियों का कर्त्तव्य है कि वे अब महाविनाश के समय तक ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करें तथा मनोविकारों पर ज्ञान-योग द्वारा विजय प्राप्त करने का पुरुषार्थ करें। वे किसी को भी दुखी न करें। यही महाव्रत है जोकि 'शिव-व्रत' के नाम से प्रसिद्ध है और यही वास्तव में शिव का मंत्र (मत) है जो कि 'तारक मंत्र' के नाम से प्रसिद्ध है क्योंकि इसी व्रत अथवा मंत्र से मनुष्यात्मायें इस संसार रूपी विषय सागर से तर कर, मुक्त होकर शिव लोक को चली जाती हैं।** ❖

जैसे स्थूल संपत्ति होती है वैसे ही समय, संकल्प, श्वास हमारी सूक्ष्म संपत्ति है। इनमें से कोई भी व्यर्थ न जाए, सदा सफल हों, चाहे मनसा सेवा द्वारा, चाहे वाचा द्वारा, चाहे कर्मणा द्वारा। ईश्वरीय वरदान है, सफल करेंगे तो पद्मगुणा सफलता का अनुभव करेंगे।